पोवारी काव्य
जतन
- सौ.छाया सुरेंद्र पारधी

कवियत्री को परिचय

नाव	:	**सौ.छाया सुरेंद्र पारधी**
बाबूजी को नाव	:	श्री. धनलाल पी.रहांगडाले
जन्मगाव	:	बरबसपुरा. जी : गोंदिया
जन्म तिथि	:	08/11/1976
शिक्षण	:	M.A. Bed
व्यवसाय	:	शिक्षिका
मोरा छंद	:	काव्यलेखन, वाचन, बागकाम
विशेष छंद	:	पोवारी काव्य लेखन पोवारी बोली भाषा को प्रचार प्रसार साती अविरत कार्य करन की इच्छा से।

प्रकाशक - सोनू भगत, अर्जुनी

प्रस्तावना

आमी पोवार अना आमरी बोली भाषा पोवारी आय । जसजसो शिक्षा को प्रचार प्रसार भयेव तसो तसो आमरी बोली कही लुप्त होत गई। काहे की लोक गाव सोडकन शहर मा गया वाहा को वातावरण मा घुलमिल गया अना आपली बोली, आपला रीतिरिवाज भुलन बस्या। असोलका आपली मायबोली नामशेष होयेच पर आपला रीतीरिवाज भी भूल जायेती. एकलका आपली आवनेवाली पिढी आपलोला माफ नही करणकी. मनून पोवार समाज न एकजूट होयश्यानी मायबोली क् उत्थान साठी प्रयत्न करे पाहिजे. अज पोवार समाजमा चांगला चांगला साहित्यिक, लेखक, कवी. सेती, प्रतिभा की कमी नहाय। उनक् सहयोग लका पोवारी साहित्य की निर्मिती होय रही से। ओको जतन भी होय रही से।

आबं भी आमरो गावइनमा पोवारी बोली लोक बोलसेती या बड़ी साजरी अना गर्व की बात से। पर बोलीभाषा को प्रचार साती साहित्य मंजे कथा, कहानी कविता, बाल कविता, बोधकथा, पत्र, निबंध निर्माण की अना जतन की गरज से। तबच पोवारी साहित्य समृद्ध होये, ओको विकास होये।

सौ. छाया सुरेंद्र पारधी इनला आपलो मातृभाषा को प्रती लगावं अना साहित्य को प्रती समर्पण को कारण वय पोवारी बोली मा कविता लेखन करसेती। शब्दला कविता को रूप मा सटीक रूप लक उतरावणो कठीण रवसे, पर कवियत्री न सुंदर काव्यलेखन करखन आपलो कवी धर्म निभाई सेन। "कास्तकार", "टुरी को बिहया" कविता मा काश्तकार की व्यथा बाचश्यानी बिकट परिस्थिति को अंदाज आवसे। "बिरानी" कविता मा पोवार समाज की पूर्वज को स्मरण की चालीरीती दिससेत। दिवारी, मंडई, अख़डी, कानुबा, पोरा, नवरात्री दसरा, सामाजिक विषय असो विविध विषय पर "कविताइनको को गुच्छाच" से।

आमरा आराध्य राजाभोज परा भी सुंदर सुंदर कविता सेती , जिनकोमा राजा भोज को शौर्य को वर्णन कवियत्री न करिसेस। "रेहका" कविता मा रेहका को भावस्पर्शी वर्णन से। "मामा को गांव" सरीखी कविता बाचेपर सबला मामा को गाव की याद आपसुकच आवसे। "मोरी आजी"अना "मोरी माय" कविता मा माय को हुबेहुब वर्णन से । अंत मा ,"मिट्ठू, परिरानी, चंदा मामा, दोस्ती, मोरी शाळा, मोर, प्राणी की सभा, मोरा अजी" असो बालकविता को भी समावेश से। असो 84 कविता को येव संग्रह तुमरो मन मा निश्चितच बस जाये या आशा से। "पोवारी काव्य जतरा" साती अना भविष्य को लेखन कार्य साती मोरी शुभकामना अना आशीर्वाद।

श्री. डी.पी. रहांगडाले
से. निवृत्त नायब तहसीलदार
गोंदिया.

दूय बोल मोरा

आदरणीय वाचक गन, 'पोवारी साहित्य जतरा' येव मोरो पयलोच कविता संग्रह तुमरो सामने प्रस्तुत करन बड़ी खुशी होय रही से। येव कविता संग्रह मोरा बाबूजी श्री. डी. पी. रहांगडाले , गोंदिया इनको पावन चरण कमलमा समर्पित करूसु। मोरो पोवारी कविता लेखन की सुरुवात भी योगायोग लक भई। मी पयले मराठी अना हिंदी कविता लिखत होती। पोवारी समूह मा मी 21 सप्टेंबर ला एक लहानशी कविता लिखेव। वा कविता ला अच्छो प्रतिसाद भेटेव। ना यहां पासुन मोरी पोवारी काव्य लेखन की सुरुवात भई। काव्य लेखन आब अविरत चालू से।

कोनतोही समाज की बोलीभाषा या वोन समाज को दर्पण रवसे जेकोमा ओन समाज का रीति रिवाज संस्कृति की झलक मिलसे । बोलीभाषा सब समाज जनला एक मालामा बांधकर ठेवसे। उनकोमा आपसी प्रेम, बंधुता बनाएकर ठेवनला मदत करसे। अना वोन समाज की पहचान बन जासे। असि मोरो पोवार समाज की मोरी मायबोली पोवारी से।

मोरपंख सी सुंदर पोवारी
शहद सी मीठी बोली मोरी
अनोखो शब्दों कि फुलवारी
सजावो मायबोलीकी क्यारी

मोरो मायबोली को जास्त लिखित साहित्य उपलब्ध नहाय। मोरो बोलीला समृद्ध करनसाती अना समाजमा लोकप्रिय बनावन क दृष्टिलक मोरो कविता संग्रह *पोवारी काव्य जतरा* येव लहानसो प्रयास आय। येन काव्यसंग्रह मा 84 कविता को संग्रह से। पोवारी समाज का रितिरिवाज, त्योहार, आमरो इतिहास असो विविध विषय पर कविता की जतरा लगी से।

मोरी मायबोली बोलुन कौतुका।
जसी गोड गोड अमृतकी धारा ।।
बोलबिन सारा ।प्रेमलका।।

येन पुस्तक का प्रकाशक चि.सोनू भगत जी की अत्यंत ऋणी सेव की उननं येन काव्यसंग्रह ला प्रकाशित करन साती मेहनत लेइन, अना मोला मदत करीन। दृश्य अदृश्य स्वरूप मा जिनको जिनको सहकार्य मिलेव उनकी भी मी शतशः आभारी सेवं। मायबोली को प्रचार प्रसार को वारी मा सबको योगदान मिले। मोला भरोसो से कि येव काव्यसंग्रह तुमला पसंद आए ना सबको आशिर्वाद मिले।

- सौ छाया सुरेंद्र पारधी

माय पोवारी

आमी आजन पोवार

भाषा आमरि पोवारी

राजाभोज का वंसज आमी

दिलका सेजन राजाभोज वानी

चार पावना आया तरी

उपाशी नहीं जात कभी

असा आमी पोवार सेजन

पोवारी से मिश्री कि डली

या मोरी पयली कविता ज्या मी पोवारी मा लिखेवं।

बहुत सी साजरी प्रतिक्रिया आई। मुन लिखन को हुरूप आयेव।

ना आब अविरत लेख, कथा अना काव्य लेखन चालू से।

मोरा अजी

अजी मोरा सेत मोठा रुबाबदार
पांढरी शुभ्र मिशी शोभ् चमकदार
जसी चमकसे धारदार तलवार
पांढरो फेटा उनको कल्लीदार

कोऱ्यामा उनको से मोरो संसार
कथा कहाणी को सेती भंडार
घरका मुखिया आमरो आधार
हर बस्तरवार करसेत बजार

खाई पिई हड्डी, कड्डी से चाल
छड़ी नहीं लग, आवाज मा दहाड़
येटबाज चाल उनकी जसो शेरखान
थर थर कापसेत मोठा पहेलवान

अजी मोरो से सद्गुण की खान
सब जाग् से उनको मानपान
आयकसे सब पतला सेती कान
समाज कार्य मा करसेती दान

दात सेती जसा कनिस का दाना
नहीं खाती तंबाखू चुनो ना पाना
देखावसेत उनको जमानो का आणा
सेवा करु उनकी पुण्य मोला मिलेना

सीताराम

दशरथ नंदन कौशल्या पुत्र वीर क्षत्रीय राम
अयोध्या नगरी सुंदर जहान जलम्या श्रीराम

जनक नंदिनी,मिथिला कुमारी सुकुमारी सीता
भूमी मा मिली जब नांगर चलाय जनक पिता

परशुराम बिसर गया शिवधनुष्य मिथिलामा
दिव्य शिवधनुष् खेलन बसी सीता आंगनमा

जनक नंदिनी सुकुमारी स्वयंवर से सीता को
चढ़ाये प्रत्यंचा शिवधनुष्यपर पती होये ओको

धनुष्य तोडकर रामजी बन्या सीता का भ्रतार
चली जानकी अयोध्या संग जगको पालनहार

जगमा सुंदर से एकही नाव बोलो सब सियाराम
सुंदर दिव्यज्योति जगे मनमा नहीं मायाको काम

आदिशक्ति स्वरूप सीता, विष्णुको अवतार राम
ज्योति दिव्य जगाओ मनमा लेवों सब राम नाम

राम नाम ही अंतिम सत्य से येन मोहमई जगमा
बेड़ापार होये सबको सीताराम नाव प्यारो सबमा

आजीमाय

(अष्टाक्षरी काव्य)

मोरो तानी नातीनला,
एक कथडी सियेव.
नाना रंगका टुकड़ा
लगायके सजायेव

लाल, हिरवा पिवरा
निळा जांभरी संतरा
रंग रंग का तुकडा
जमायेव मी केतरा

संस्कारको सुईमा से
दोरा रेशमी बंधन
बाळ शिवून कथडी
स्पर्श माया ममताको

दिस कथडी शिवता
मन जाय उडकन
गोड रूप नातीनको
देसे मनला हुरूप

फुली सुंदर चौफेर
एक एकला जोडेव
रस्सा बांधेव आळोला
झुला कथळी झाकेव

सतरंगी पारनामा
दूध परकी से साय
खेल खेलकर थकी
सोय गई मैना बाळ

आजी नातीनको नातो
जसो मखमल सम
उबदार कथळी मा
माया दुनिया की रव

सकार

झुंझुरकाको हवाको थंडो झुरका
आरायेवं कोंबडा आवाज कानमा।
पक्षी करत किलबिल उड़या बनमा
गावसे कोकिळा स्वरमा रानमा //1//

झुंझुरका उठकर करेव मुखशुद्धी
नवी ऊर्मी जागी मनमा कामकी।
सडा टाकेव हिरवो हिरवो शेणको
वोको पर रांगोळी बेल फुलइनकी //2//

उठयां मोरा माय पाखरू सोयकर
करसेती चिवचिव धावसेत घरभर।
हातोड़ी रोटी बनाऊन खायेत पोटभर
जासू खेतमा हिरवो गवतला भरभर //3//

इरा हातमा धरेव काटून हिरवो गवत
मोरो कपला गायको बासरू लहान।
हंबरत रहे घरं मोरी साधीभादी गाय
जाऊ लवकर लगी रहे ओला तहान //4//

बोझा बांधेव गवतको हिरवो हिरवो
मन नहाय ठायी धर घर की बाट ।
घर पडीसे धंदा मोरो जसो को तसो
बाट देखत रहे सावळो घरधनी घरं //5//

उन्हारो का खेल

भात भाजी को नहानपण खेलजन खेल
सब सखी गोई इनको एक घरं जमं मेल।
नवरा नवरी को बीह्या साती मंग रेलचेल
कागजको डफरीको बाजा सबको मनमेल।।

बरात आव नाचत कुदत नोहतो दहेज
गंमत गुंमत का मंगलाष्टक अना स्टेज।
हासी मजाक चल सबला लगं बडो बेस
हासत कुदत बरात फिर नोहतों क्लेश।।

उन्हारोमा रवत सबको मनमा नाना खेल
चोर पुलिस अना चोरला कोठा की जेल।
आपड तुपड़ अना नदी को पहाड़ खेलके
चंगाअष्टा को खेल रम जाय दिवस सरके।।

अंदाबिबू मा दाम वालों को डोरापर पट्टी
रोंटी खानो मा वस्ताद करत मंग कट्टी ।
मनमा नोहोतो कपट करत होता बट्टी
नहानपन खेलन की मज्या आवं सच्ची।।

उठा बसी, लंगड़ी अना खेल बिल्लाको
लाड आवं मोठ्यानं कुत्राको पिल्लाको।
रेतीमा खेल रमकत होतो मंग किल्लाको
खिसामा रवत होतो चिल्लर खुरदाको।।

डोकीला थोडीशी तंबाखू चरावजन
वोको नाच देखकर खदखदा हासजन।
असी होतो आमरो खेडाको नहानपन
गागरामा बीत दिन खुशी मा रवं मन।।

टुरी को बिह्या

सांगु का भाऊ तूमला एक बात
चार एकड़ मा लगायेव मी धान
पानी भी अवंदा साजरो आयेव
मनकों मणमा बहुत खुश भयेव

टुरी को बीह्या कर टाकून कयेव
जवाई साती भी अंगठी बनायेव
पानी न काही पिच्छा नहीं सोडीस
अरधो धानला गाद किडान मारीस

अरधो धान खेतमा काटनला आयेवं
देखकर् चेहराको मोरो पानी परायेव
आब भी से बांधी मा डबडबा पानी
पानी सुकेपर होए मोरी धान काटनी

कजाने अवंदा धान होसेत का नहीं
टुरी को बीहया को सपन तुटेव घाई
मुन मनमा कर लेयेव पक्को बिचार
शाळा शिकाऊ टुरीला एक दुय साल

उन्हारो को छूट्टी वानी कोराना की छुट्टी
गमसे मोला घरचं स्कूलला माऱ्या बुट्टी।धृ।

चल ना सोन्या आपून खेलनला जाबीन
संग आपलो राम्या, श्याम्याला लिजाबीन
खेल खेलबिन मजेदार नोको करो कट्टी
गमसे मोला घरचं स्कूलला माऱ्या बुट्टी।।1।।

कंचा धरले खिसामा अना रेमट ओको संग
डब्बामा हातोळी रोटी, आंबा को रायतो संग
मज्या आये मस्त सब खेलबीन दांडू बिट्टी
गमसे मोला घरचं स्कूलला माऱ्या बुट्टी।।2।।

आंबा खाल्या आबं खेल आमी जमावबिन
संग संग टायर को झुला आमी झुलबिन
करबिन मज्यामस्ती आमी संगीइनकी गट्टी
गमसे मोला घरचं स्कूलला माऱ्या बुट्टी।।3।।

आये जबं तरास त लपा छुपी खेलबीन
श्याम्या देये दाम आमी सब लुकाबिन
रेस लगाये कोणी आमी बजावबिन सिट्टी
गमसे मोला घरचं स्कूलला माऱ्या बुट्टी।।4।।

खेळबिन ओनसंज अंदाबिबु केतरो पानी
मसरी धरे सरीखो करे भुम्या वाहानी
जब बांधबिन ओको डोरा पर पट्टी
गमसे मोला घरचं स्कूलला माऱ्या बुट्टी।।5।।

असो खेल खेलबिण होये बाका व्यायाम
मजबूत बने शरीर नहीं रवण का लहान
कट्टी कोनी होवो नोको करो प्रेमलक मिट्टी
गमसे मोला घरचं स्कूलला माऱ्या बुट्टी।।6।।

पोरा

शोभसे जोडी सिंगाऱ्या बैड़लकी आंगणमा
मिलसे मदद बईल की किसानी को काममा
परा पानी सब होय जासे पोरावरी को दिनमा
असोमाच आवसे मंग पोरा को सन अवसमा

पोरा को पहले होसे मोहबैल की पूजा घरमा
ओंग भरसे भज्याबुड्या लक टूरा की कोठामा
बैल धोएकर आया बांधो घोलर झुली आंगपरा
सिंगला बेगड़ अना मठाटी शोभसे मस्तकपरा

लगी तोरण लिजाओ बैल गांव को आखरपरा
झर झर झड़ती गावसेती पोरा फुटन को बेरा
भई आखरी झड़ती भड़केव देखो बैड़ल पोरा
आया घरधनी जोड़ी अना तोरण धरश्यान मोरा

पाय धोवो जेवावो जोड़ीला कुड़वाको पत्रीमा
ऋन चुकाओ धरती मायको पुत्रको येन घड़ीमा
मारबत निकलसे दूसरों दिन बुराई को प्रतिकमा
मोंगसा परासेत अना पानी दूरासे येन महीनामा

लहान टुरु साती लाकड़ी नंदीको पोरा भरसे
बैलको महत्व केत्तो से येका संस्कार करसे

उंदिर अना बिलाई (बिल्ली)

बिलाई को घर होतो मोठोजात
दूय चिल्ला पिल्ला बड़ा शैतान

घरमा दर करेसेत जहावाहान
कपड़ा कतर कर भया हैरान

भूख लगीं गया आई को जवर
आई खानला पायजे गवर गवर

बससेजन दिनभर घात लगायकर
हाथ नहीं आवत जासेत चकायकर

केत्तो अच्छो होतो आई अगर
बिकता उंदरा बजारमा किलोलक

मस्त जाता बजारमा सबजन
पसंद का मोल लेता उंदीर मंग

मोठा मोठा ऊंदीर पोख्या वाला
आनता मंग निवड निवड कर

बारीकसुरिक नहीं लगत बाका आमला
सस्ता मिलता त आनता क्विंटलका

कोथरी मा उनला बाका भरकर ठेवता
तीज त्योहार मस्त मज्यालक मनावता

पैसा नहीं रवता त उधारी पर आणता.
किलो किलो सब पोट फुटतवरी खाता

मंडई (मेला)

मंडई की मोला रवसे बाट
आवसे फुफाबी निक्कू को साथ
कौस्तुभ भाऊ को रवसे ठाठ
पैसा साती वू मंडावसे आट

आवसे वु काका काकी संग
जमसे खूब मंग आमरो रंग
नवा नवा कपडा पहनो मंग
फुगावालो आयेव करं पोंग पोंग

माय सबला रुपया देसे दस दस
अजी की चंचि बजसे खन खन
फुगावालों आयेव पराओ दन दन
लाल हिरवा फुगा उड्सेत भर भर

संतरा बस्या टोपलिमा देखत टकमक
सिंगुडा काटेपरा चमकसे चमचम
कोनी मारं दांडी चिवडा तोलं कमकम
गर्दी मा बजसे अगास पारना करकर

जलेबी सिंगुडा केरा खाया पोटभर
फिर फिर गया आमी बस्या थककर
सबको खिसामाका पैसा गया सरकर
चल कौस्तुभ काकाला मांगबिन पटकर

परीक्षा

कालच येडेकर गुरूजी न संगिन आमला
सकारी परीक्षा देवो,नहीत नापास करु तुमला

गुरूजी को भेव लका रातभर अभ्यास कऱ्या
सोनू को त रातभर नहीं लगेवं डोरा ला डोरा

रातवाच लिंक आई, सोनू न हुशारी करीस
पेपर देयश्यानी समूह मा मार्क भी टाकीस

आता धुकुर पूकुर जीव लहानसो भयेव
भेवत भेवता मी पेपर गुरूजी को देखेवं

पेपर देखश्यानी मन मयुर मोरो नाचेव
प्रश्न होता सोपा जे रातभर मी बाचेव

प्रश्न होता रंग रंगका पुरा बत्तीस
सोडायेव पुरा ना करेव सबमिट

मार्क मोला भी आया पुरा सौ टक्का
नाचेवं मोरो मन सब भया हक्काबक्का

परीक्षा

येड़ेकर गुरूजी आमरा हुसार
पेपर लेसेत शनवार को शनवार
प्रश्न रवसेत एक से एक शानदार
मेहनत लेसेत आमरो बढ़ावन ज्ञान

बह रही से संस्कृति की ज्ञान गंगा
सबला सांगो सब देव तुमि परीक्षा
ज्ञान बढ़ाओ सब दिमाग रहे चंगा
पोवारी को प्रसार करो बहाओ गंगा

परीरानी

गोरी गोरी पान चांदणी सरीखी छान
सुंदर सुंदर पंख जसो पिपर का पान

सुंदर सलोनी होती परी गोरी गोरी
हातमा परीको एक जादू की छडी
जादुलक हिरवो हिरवो करसे रान
सुंदर सुंदर पंख जसा पिपर का पान

एक दिवस मोरो संग वा खेलनला आईं
मोला कसे देखाव तोरो गणित की वही
मोरो दूही डोराला लगी आसुकी धार
सुंदर सुंदर पंख जसा पिपर का पान

रोवु नोकों कसे मोला परीलोक जाबिन
परीको शाळा मा अंकगणित शिकबिन
परीलोककी शाळा मस्त जादू की खान
सुंदर सुंदर पंख जसा पिपर का पान

जादू को शाळा मा आई भलतिच मजा
परी बाई देत नोहति कोनीलाच सजा
वजाबाकी बेरीज दुही उड़त होता छान
सुंदर सुंदर पंख जसा पिपर का पान

गुणाकार भागाकार की भई दुय दूय बात
भागाकरको लगेव मंग मोला भी एक लात
भदकन आपटेव मी डोस्का को भार
सुंदर सुंदर पंख जसा पिपर का पान

उघडेव डोरा त् होतो मी खाटकों खाल्या
आई मोरी बोंबलत आयी का भयेव रे बाल्या
परी सारखी आई दिसी जादू ओको काम
सुंदर सुंदर पंख जसा पिपर का पान

चंदा मामा

देखो देखो झुम कर आई बरात चंदा मामाकी
झिलमिल करता बन्या सेत सब सितारा बराती

चांदनी मामी सजी से सुंदर साड़ी शुभ्र चांदिसी
देखो देखो अंबर सजीसे घाई सबला बिहयाकी

धरती माय देख रही से बरात चंदा भाईकी
घाई घाई आया सप्तरुशी आशीर्वाद देनसाती

धुंडत बसी बुळगी कोणीला बीह्यामा जानसाती
चांदा चांदणी को बीह्या लगेव पुनवाको राती

झुमेव अंबर झुमी धरती आया सब जेवनसाती
जेवणखावन भयेवं सबको आता भई बिदाई

चांदा को मखमली रथमा सिमटकर बसी मामी
रथका घोडा उड चल्यां चांदा को घर जानसाती

मोर

हे भगवान मोला सुंदर मोर बनाव
पंख मोरा हिरवा निळा गर्द सजाव।।
हर पंख मा निळा नीलमनी बसावं
निळी निळी मान मखमल सी बनाव।।1।।

चोच लंबी डोळा मोरा कंचासा बनाव
तुरा झुब्बेदार निळा पाचू उनमा जडाव।।
पिसारा मोरो दुनिया सबसे सुंदर बनाव
मोरो नाच देखणं देवा पार्वती संग आव।।2।।

कारा करा ढग निळो अभारमा जमेती
बिजली होये चमचम ढमढम ढग बजेती।।
वर्षा की रिमझिम फुहार सरसर बरसेती
नाचून झूम झूमकर पायमा घुंघरू बजेती।।3।।

कान्हा तोरो मुकुटमा मोला दे सदा स्थान
स्वरसती माय रवसे मोरो पर विराजमान।।
कार्तिकेयको वाहनको मोलाच मीलेव मान
शिवपारवती का दर्शन करन जाबी कैलाश।।4।।

पर देवा येतरा रंगीत पंख जब तू देजो
ओको संग मोला उडणकी शक्ती देजो।।
पायमोरा काराकारा उनमा रंग तू भरजो
सुंदर मोरो सारिखो येन जगला करजो।।5।।

मिट्ठू

हिरवो पोपटी मोरो सुंदर रंग
देखकर होओ तुमि सब दंग
आओ खेल खेलो मोरो संग
जाओ तुमि मंग इतन उतन

वाकड़ी मोरी चोंच लाल लाल
गरोमा से मोरो मोती की हार
पंख सुंदर हीरवा हिरवागार
रचीस काया ईश्वर चित्रकार

दाणा कणीस का मन ललचाव
पिक्या आंबा मोरो मनला भाव
अनार मोला घडी घडी बुलाव
मिरची देखके तोंडला पाणी आव

पंख फडफडाय मी उड जाऊ
नील गगनमा मस्त फिरके आऊ
स्वादिष्ट पिक्या फल मी खाऊ
नदी नाला को थंडो पानी पिऊ

कभी भी तुमरो हात ना आऊ
सोनोको पिंजरामा मी नहीं रहू
आपलो आजादी पर इतराऊ
भाईबहिन संग फिरणला जाऊ

सोनो को पिंजराको नहाय मोल
बात करूसू मी सब संग तोल
रामराम मीठो मिठो बोलु हरदम
उड़तो रहूं अभारमा जीवनभर

माहेर

मन पंखेरू पंखेरू
जासे उड़ात माहेर
माय माउली की छाया
याद आवसे पदर

पिता मोरा विठ्ठू राया
जसी तपनमा छाया
स्वार्थ बिना झिजी काया
माय जसी ओकी माया

भाई राम लक्षुमन
प्रितलक भऱ्ं मन
भोवजाई सीता सम
पींढो देसे हासकन्

असो माहेर माहेर
प्रेम सागर अपार
खिनभर जासे वाहा
माता पिताजी को द्वार

खऱ्यान
(द्रोण काव्य)

किसान की किसानी
बोवसे वा पच्छी
नदी को वानी
पिक्या मोती
सोरानी
खुशी
से

आया पिवरा मोती
हाससे वा खेती
पानी से घाती
चुरनिला
लहाकी
करो
जी

खऱ्यानमा सजेव
शेनको वू सड़ा
मोडा भरेव
मोती पड्या
करेव
जमा
गा

गया बोरामा मोती
कमाई घामकी
चमकी ज्योती
भरी कोठी
सांगती
खुशी
जी

मंडई (मेला)

मंडई की मोला रवसे बाट
आवसे फुफाबी निक्कू को साथ
कौस्तुभ भाऊ को रवसे ठाठ
पैसा साती वू मंडावसे आट

आवसे वु काका काकी संग
जमसे खूब मंग आमरो रंग
नवा नवा कपडा पहनो मंग
फुगावालो आयेव करं पोंग पोंग

माय सबला रुपया देसे दस दस
अजी की चंचि बजसे खन खन
फुगावालों आयेव पराओ दन दन
लाल हिरवा फुगा उड्सेत भर भर

संतरा बस्या टोपलिमा देखत टकमक
सिंगुडा काटेपरा चमकसे चमचम
कोनी मारं दांडी चिवडा तोलं कमकम
गर्दी मा बजसे अगास पारना करकर

जलेबी सिंगुडा केरा खाया पोटभर
फिर फिर गया आमी बस्या थककर
सबको खिसामाका पैसा गया सरकर
चल कौस्तुभ काकाला मांगबिन पटकर

अहंकार

परम शिवभक्त, महा बलशाली
सुंदर सोनो की लंका को अधिपती।
लंका की नहीं बची महालमाळी
अहंकार लक् मारी गई ओकी मती।।

अहंकार को मणमा धससे भूत
माणूस की होसेत भाऊ बडी गती।
चार लोक नहीं रवत सकोली जवर
पैसा की गरमी होसे आगमा सती।।

जब सत्ता आयजासे एकबार हातमा
अहंकार को पिल्लू होयजासे साथमा।
स्वार्थ साती देसे समाजको बलिदान
नहीं रव ईमानदारी नेता को बातमा।।

कायला येत्तो अहंकार से मानव तोला
कब काया को पक्षि पिंजरा तोड़ उडाये
पंच तत्व की बनी या नश्वर नर काया
एक दिवस येन माटी मा मिल जाये

अच्छो काम कर समाजसाती काही
समाजका आमी सेजन शतशत ऋणी।
अहंकार को जारवा तोड होय तय्यार
पोवारी साती बन तू वाल्मिकी मुनी।।

कापूर

थोडोसो विषय से अज मोरो अलग थलग
करबिन ज्ञान विज्ञान पर बात तब् तलक.
कापुर काहे जरावसेत सब हिन्दू घरमा
कापूर जलायेलक मच्छर दड़ासेत दरमा.

बड़ों गुणकारी कीटाणु मारक से कापूर,
नोको समझो येला तुमी थातुर मातुर.
हर जागमा सकारात्मक ऊर्जा जगावसे
मन मंदिरमा आमरो श्रध्दा आनंद भरावसे.

आरती को कपूर जब भी कभी लेओ,
हाथ को हतोरिला नाक को जवर ठेओ.
घुटना को दर्द मा कपूर की मालिश करो
या जुव ला मारनसाठी डोसकी मा मलो.

अन्तिम जत्रा

स्वप्नलोक मा मोला आंग धोवायो जात होतो
बड़ों प्यार लक मोला सजायो जात होतो
साज सिंगार सब मोरो करायो जात होतो.
बच्चा सरिखो खांदा पर उठायो जात होतो

जो कभी देखत नोहता पलटकर मोरो कन
वय भी अज जोर जोर लक रोवत जात होता
आता बाजा को आवाज आवन लगेव कानमा
आता का होए एकच् ध्यास लगेव मणमा

कंधा पर उठायकर बराती चलन लग्या
काँप गई आत्मा मोरी मरघट बोलंन लग्या
मोरो पर जान लुटावने वाला प्यार करने वाला
मोला ही अग्नि लगावन साठी तैयार बस्या।

कवी

बिचार आवसे मोला भारी ।
कविता कसी आवत् रहेत् सारी
एकच विषय पर लिखसेत् कवि
तरी भी रचना रवसेत् न्यारी न्यारी

बगीचा मा जसी फूल की क्यारी
पंढरी मा जसी वारकरी की वारी
आत्मा का शब्द बिचार बनायकर
कसो शाई लक कागज् पर उतारसेत्

कल्पना को दुनिया मा रवसेत कवि
जहा् नहीं पहुंचं रवि वहां पहुंचं सेत

मंडई

आता आमरो गावं बड़ी मज़ा आए।
भाऊबिज पासुन मंडई धूम मचाए।।

भाऊ घरं बहीन ओवाड़न आए।
मंडई मा दुकान लगेती रंग रंग का।।

केरा, शिंगड़ा, जलेबी ना चिवड़ा।
बंगडी, रिबीन अना दुपटा भी मिलेती।।

सासू घर लका आई सहेली भी मिलेती।
टुरा टुरी इत उत् धावत खेलेती।।

मंग आये दंडार होए भिड़च भीड़।
सोंगड़या सोंग आने मज़ा आए भारी।।

रातिला मंग जमे तमाशा को फड़।
शाहिर आए जमे तमाशा को रंग।।

आनंद को रंग मा सबको नाचे मन।
हर साल जमे असोच मंडई को रंग।।

व्यसनमुक्ती

कसो सांगु तोला ? शरम् आवसे मोला
पोटमा से गोला, तोरो मोरो ।। ध्रु।।

नोको रोऊ असी? का कहेत सकी
जिनगी से कसी, मोरी सोना ।।1।।

रोज पिवसेव् दारू?आता कसी करू
रोज काहे मरू, तुमरो साती ।।2।।

दारू की लत्, करसे गत्
गयेव आता थक, मोरी सोना ।।3।।

आता फुट्या करम् ,कायको धरम्
दूर भयेव भरम् , मनमा को ।।4।।

आऊ तोरो संग् , व्यसनमुक्ती डंग्
सुटे दारू मंग्, मोरी सोना ।।5।।

मन् भयेव् खुश, बित जायेत दिस्
नई रवनकी टिस् , भविष्य की। ।।6।।

दिवारी

रावणला मारकन
अयोध्यामा आया राम
लक्ष दीप जर उठया
इंधारोको नहीं काम

बलशाली विक्रम वू
महाप्रजा हितकारी
बस्या सिंहासन पर
पुण्यदिन वू दिवारी

आई आई दीपावली
करो घरकी लिपाई
पोतो रंगलक भिती
करो खुशी की छपाई

पाच दिवसको सन
खुशिमा रमसे मन
लळीसंग फटाकाको
खुशी मनावती जन

विश्वकर्मा पूजा करो
धनतेरसला सब
गिरधारी न करिस
नरकासुरको वध

बांधो तोरण पताका
आई लक्ष्मी वा हासत
पुजबिन भक्तिभाव
वर्षा धन की करत

बलिपुजा को दिवस
आय पोवारी दिवारी
वर्णी कथा पुरानमा
येको महत्व से भारी

गायखुरी को चौऊक
जातो, उखरी, घरमा
गोधनकी होसे पुजा
गावंमाको आखरमा

बळीराजा घोनाडको
राणी घड्या दाभटकी
पूजा डोकरी की कऱ्या
खीर नवो चाऊर की

लक्ष ज्योतीकी आरास
भाई बहीण को प्यार
ओवाडसे बहिनाई
आशीषको उपहार
मड़ई, दंड्यार मस्त

भेट खुशिलक होसे
आवसेती सखिगोई
मन माहेर उडासे
खाजो दिवारीको लाडू

अनारसा बन्या घरं
बांध देसे माय मोरी
झोरा भर् भरकर
ज्ञानज्योती आती दीप

बाती आय येव तन
भक्ती को रहे तेल
तबवरी जरे बात

धोंड्या (अधिक मास)

इंग्रजी कैलेंडर मा आवसे लिप वर्ष चार सालमा
तसो तीन सालमा धोंड्याको मास हिंदू कैलेंडरमा

चांद्रमास 354 अना सौरमास 365 दिन को रवसे
मून कालगणनामा अकरा दिवस को फरक आवसे

हर अडिच सालमा एक अधिक महिना आवसेत
येलाच धोंड्या या पुरुषोत्तम(विष्णु) मास कवसेत

जवाई विष्णु ना टुरीला महालक्ष्मीको रूप मानसेत
नवी खरीदी ना बिह्याको शुभकाम वर्जित करसेत

खगोलीय करिश्मा फर्क चंद्रसूर्य कि गतिको आय
चष्मालक देखो विज्ञानको अंधश्रद्धा जाये पराय

सूर्य

जगको केंद्रबिंदु तेजोमय तू ऊष्मा को गोला
नवग्रह फिरसेती आसपास उनको तू रखवाला।
धरती पर सब जीवजंतू को जीवन को आसरा
पुराणों मा वर्णित एकसौ आठ नाव सेत तोरा।।

कारो कूचकुचो इंधारोमा तांबुस किरण दिससे
भास्कर आपलों सोनेरी रथल धरतीपर आवसे।।
पक्षी की किलबिल, सोयेव जग गतीमान होसे
सजीव जगको आदित्य ही नवसृजन करसे।।

निळो घन अभारमा दिनकर दुपारमा पेटिसे
किरण लक दुनिया पर नजर ओकी रुखिसे।
गरमी मा ओको नवजीवन की ऊर्जा बसिसे
धरा पर ऋतुचक्र की महिमा ओकिच देन से।।

किरणमा अरुण को जीवनका सेती सब रंग
अस्तला जासे होसे सजीव जगकी क्रिया मंद।
सूर्य देवता की होसे पूजा भक्तिभाव को गंध
सूर्यपुत्र आय शूरवीर कर्ण जेला दान को छंद।।

दिनकर सरिखो निस्वार्थ दानी नहीं जगमा
असीमित उष्माला भरलेव सौर गगरी मा।
सबसिडी का सौर पम्प लगाओ खेती मा
सूखी होये अन्नदाता किसान आमरो सबमा।।

धोंड्या (अधिक मास)

इंग्रजी कैलेंडर मा आवसे लिप वर्ष चार सालमा
तसो तीन सालमा धोंड्याको मास हिंदू कैलेंडरमा

चांद्रमास 354 अना सौरमास 365 दिन को रवसे
मून कालगणनामा अकरा दिवस को फरक आवसे

हर अड़िच सालमा एक अधिक महिना आवसेत
येलाच धोंड्या या पुरुषोत्तम(विष्णु) मास कवसेत

जवाई विष्णु ना टुरीला महालक्ष्मीको रूप मानसेत
नवी खरीदी ना बिह्याको शुभकाम वर्जित करसेत

खगोलीय करिश्मा फर्क चंद्रसूर्य कि गतिको आय
चष्मालक देखो विज्ञानको अंधश्रद्धा जाये पराय

तिरंगा

तीन रंगों को रंग रंगीला वस्त्र नको समजो येला जान
भारत की आन बान शान भारतवासियों को अभिमान

खादी को येव बनेव तिरंगा तीन रंग मा रंगेव तिरंगा
एक किसान वेंक्काया पिंगली न करिस अभिकल्पना

देखो येको तीन रंग की तुम्ही सब भारतवासी महिमा
सबसे वरत्या बलिदान को प्रतीक आय केसरिया रंगमा

श्वेत शुभ्र रंग से सच्चाई पवित्रता शांती को रंग
अखंड भारत मा शांती को संदेश देसे येव संग

बीच मा शोभसे चोवीस आरी को अशोक चक्र संगमा
आत्मरक्षा शांती समृद्धी विकासको संदेश देसे आमला

समृद्धी को हिरवो रंग समृद्धी दर्शावसे भारतमा
सम्मानलका लहर लहर लहरावसे तिरंगा अंबरमा

देश को मान सन्मान तिरंगा सबसे प्यारो तिरंगा
भारत की आन बान भारतवाशियो को अभिमान

सूर्य

जगको केंद्रबिंदु तेजोमय तू ऊष्मा को गोला
नवग्रह फिरसेती आसपास उनको तू रखवाला।
धरती पर सब जीवजंतू को जीवन को आसरा
पुराणों मा वर्णित एकसौ आठ नाव सेत तोरा।।

कारो कूचकुचो इंधारोमा तांबुस किरण दिससे
भास्कर आपलों सोनेरी रथल धरतीपर आवसे।।
पक्षी की किलबिल, सोयेव जग गतीमान होसे
सजीव जगको आदित्य ही नवसृजन करसे।।

निळो घन अभारमा दिनकर दुपारमा पेटिसे
किरण लक दुनिया पर नजर ओकी रुखिसे।
गरमी मा ओको नवजीवन की ऊर्जा बसिसे
धरा पर ऋतुचक्र की महिमा ओकिच देन से।।

किरणमा अरुण को जीवनका सेती सब रंग
अस्तला जासे होसे सजीव जगकी क्रिया मंद।
सूर्य देवता की होसे पूजा भक्तिभाव को गंध
सूर्यपुत्र आय शूरवीर कर्ण जेला दान को छंद।।

दिनकर सरिखो निस्वार्थ दानी नहीं जगमा
असीमित उष्माला भरलेव सौर गगरी मा।
सबसिडी का सौर पम्प लगाओ खेती मा
सूखी होये अन्नदाता किसान आमरो सबमा।।

गणपति जन्म

शिव पुराण मा वर्णित गणपति जन्म कथा
प्राशन करलो तुमि भक्त शिवपुत्र की गाथा।।
शिवपार्वती विराजती कैलाश को उचो माथा
जहा शिव तपस्चर्या करसे सेवामा उमा माता।1।

एकघन माता पारबाती स्नान करत होती
कोनीतरी पाहिजे द्वारपर राखन करणसाती।।
कसो करूगा आता मनमा भारी आयेव बिचार
शक्ती एकजुट करश्यानी बनाऊन राखणदार।2।

कहाडीस मंग आँगको मैल बनाईस पुतला
जान फुकिस ओकोमा आज्ञा देइस ओला।।
राखण कर द्वारपरा नोको आवन देजो भितरा
शंभू आयेव उमाको भेटला तर्क वितर्क केतरा।3।

भई लढाई दुहिमा उडाईस बालक को शिर
धावत आई गा गिरजाई शोक करगा अपार।।
जीवदान देव पुत्रला नहींत संकट आए जगपर
आज्ञा दे शिवजी जाओ सब दक्षिण दिशाकर।4।

आनों सिस बालकको जेकों माताकी पाठ पुत्रकरा
दिसेव हत्तीको पिला सीस धरके चल्या कैलासपरा
गजमुख लगाइन सजुमान भयेवं बालक गजधरा
खुशी होसे मनमा सलोनो रुप देख मयुरेश्वरा।5।

सबदून पयले पुजेव जासे नाव तोरो गणराया
बुद्धी सिध्दी को दाता तू गज की तोरी काया ।
अष्टविनायक रूप तोरो रची जगमा तोरी माया
पयले वंदू विनायका गणपती बाप्पा मोरया।6।

रांधनखोली

कोंनटो मा पडेव् पारोला,हांडी कव्
काहे बसेस् असो चुपचाप
पारो रोयेव् सिसक सिसकर
देखकर आपलो कारो रूप

सांगु तोला पहले को राजमा
आपली जोड़ी होती अटूट
आता दुरलकच तोला देखकर
झुरसे मोरो लहानसो जीव

याद से का तोला पयले की
पोवार की रांधन खोली
रांधनखोली मा दिमाखदार
माती को चूल्हों तीन अवली

मी अना तू ,चाटू,ताई, रई, सरूता
मलोकी, मलोका संगमा जगरा
सिल बट्टा त् आपलो तोरामा रव्
काम नोहोतो वोला आरामच कर्

दही, दूध, मही , घीव की
काही रवत नोहति कमी
जगरा भर दूध की साय पड़
पीठ को हातोडी रोटी वानी

पोवार

यह धरती से अलबेली जहां वैनगंगा की धार
हवा मा गुंजायमान सेती यहा शौर्य का गान।
अग्निवंशीयको शौर्य की गाथा गावसे हर पात
माता गढ़कालिकाको से आशिर्वादको हात।।

आबूपर यज्ञ करीन मुनिन प्रगट्या क्षत्रीय पोवार
अग्निकुंड लक प्रगट भया नाव उनको परमार।
शस्त्रधारी क्षत्रिय प्रतापी चमकसे हातमा तलवार
वध करसे दुस्टो को जनजीवन को बनेव आधार।।

उज्जैनी महान विक्रमादित्य भरतरी लक विख्यात
दसवीं सदीमा बसाइस बैरीसिहन सुंदर नगरी धार।
मालवामा मूंज भोज न करिन साम्राज्य विस्तार
भोजशाला बनाइस करिस ज्ञान को प्रचार प्रसार।।

विदर्भपर राज करीन मालवाधिस पोवार सरदार
आया धारलक जगदेव पोवार चालुक्यको दरबार।
विरयोद्धा जगदेव पोवार बन्या चांदा का महाराज
शासनमा उनकी जनता होती बड़ी सुखी खुशाल।।

मालवा पर आक्रमण करीन मुगल न जनता बेहाल
संकट आयेव भारी बिखर् गया मालवा का पोवार।
वैनगंगा किनारा पर आया सोड देईन नगरी धार
जंगल काटीन खेती करस्यार बन गया किसान।।

मामा को गाव

उन्हारो को सुट्टिमा जाजन मामाको गांव।
गुडुरलका अजी आमला आनला आव।।
आखर लकाच घोलर को अगाज कानमा आव्
मोठो मोठो बैलइनला घोलर झुली को साज रव्।।

बिहाई की आवभगत होय नमस्कार चमत्कार।
पाय धोवन पानी ना चाय नास्ता लका सत्कार।।
रातवा आंबा को रस, घिवारी को पाहुणचार।
दूसरो दिस खुसीखुसी गूडुरपर होजन सवार।।

गुड़गुड़ गूडुरकी भोवरी चलत गाळदान की बाट।
बेसकड़को नंगरदरूजा दिसत होतो मामा थाट।।
चाट्या बाट्या कनार को शेंदर्या आंबाला जाजन।
पेज रायतो खायकर आंबा खालत्या खेलजन।।

खेतमा मोट को झुर झुर पानीमा लोरजन।
बाबुर को ढीक, चार की बिजी फोड़जन।।
रातवा दिवोको उजाडो मा मज्या लक जेवजन।
आंगन माको मांडो खाल्या ओरिलऽ सोवजन।।

अजी नवहाथ करुला की लंबी कहानी सांगत ।
दूर ढोड़ी परा धुंदुर ,वरत्या चांदाचांदनी दिसत।।
अज बी याद आवसेत मामा को गाव का दिवस
नई मिलत आब् बेटाबेटीला तसा छुट्टीका दिवस।।

आंदन

सांगू का भाऊ तुमला एक बात।
आबं बीह्या की आई से घातऽ।।

एक एक पैसा जमायकर ठेयेव।।
बेटी को बीह्या कर टाकुन कयेव।।

सोफ़ा, आलमारी, ड्रेसिंग लेयेव।।
आंदन गोंदन सब लेयकर ठेयेव।।

पत्रिका छपी गावोगाव न्यौवता गयेव।
मंडपवालों ,आचारी ठयरायकर भयेव।।

घरभर मा आता खुशी नोहती मावतऽ ।
सामान आनन सब खुशी लक धावतऽ ।।

पर आता वा खुशी भय गई गायब।
कोरोना को प्रताप बीह्या लंबायेव।।

जहा को आंदन वहा पड़ेव रयेवऽ ।
पत्रिका बीह्या की नदिमा बहायेव ।।

जब हटे संचारबंदी तब काहीं होये।
पर आब जेत्ती खुशी होती तब कहा रहे।।

कमी जास्त कसोच बेटी को बीह्या त होये।
मोरी लाड़ की बेटी आपलो सुसरो घरऽ जाये।।

श्राद्ध

भादो मास मा कृष्ण पक्ष श्राद्ध जब आवसे
पितृदेवला तर्पण करके मन संतोष पावसे।
श्रद्धा लक श्राद्ध करो पितृ तृप्त होय जासे
सत्कार प्रेम को बदलामा पितृ आशीर्वाद देसे।।

पयलो श्राद्धला महत्व बड़ो पोवार समाजमा
तेलबड़ा सुवारी बनावसेत पंचपक्वान घरमा।
कुसार जवाईला ठेवसेत सब नेंग दस्तुरमा
कागुर को ठाव हिवरों पाना की पत्रालीमा।।

बिरानी टाकसेत चवरीपर पितर को यादमा
कागुर फेकसेत बरणपर काग आवनको बाटमा।
आवसेती काग पयलो घास उनको मानमा
तृप्त होसेती पांच कुरया श्राद्ध को जेवनमा।।

नोको समझो आवडंबर निसर्ग बचावनकी क्रिया
कावरा की रवसे या नव जन्मोत्सव की प्रक्रिया।
बळ पिपर को फळ खासेत ये करसेत विष्टा
तबच नवो रोप निकलसे निसर्ग की या रचना।।

आमरी संस्कृती से बडी महान ना निसर्ग पूजक
झाड पक्षी प्राणी को रक्षण करणसाती ये नियम।
असी अनमोल संस्कृती को रक्षण मा रवबी तत्पर
पितरला याद करबिंन संगमा आमरो सृष्टि को रक्षण।।

मोरी माय (आजी)

माय होती मोरी दिसनला बड़ी सुंदर।
ममता होती सबसाठी मन को अंदर।।

जब भी काही कार्यक्रम रवत् आमरो घरं।
माय मोरी नवरी वानी साजसिंगार करं ।।

नवो कोरो लुगड़ा वोकों परा आंगी जरीकाठ की।
पायमा तोड़ा, पिंजन,कमरमा चांदीको करदुडा भी।।

गरो मा एकदानी शोभ्, सोनो की सरी भारी।
नाक मा सरदा की नथ ,कान मा तर्पसाकरी।।

चेहरा की शोभा बढाव् कुकू की लाल चीरी।
बेनी ला बांधत होती रेशम की लंबी दोरी ।।

देखो तुमला भी आपलो माय की याद आये।
मायको सुंदर चित्र नयनो मा झर झर झरे।।

गवळण(कान्हा)

सोळ सोळ गा कान्हा
पदरला धरु नोको सोळ।। धृ।।

घरमा रवसे सासु मोरी
असी नोको करु तु मस्करी
तोरो नेतीमा आयेव खोळ॥1॥

तोरो बन्सरीको आवाज भारी
मोहित भई गवळण सारी
तोर सुरतला नही तोळ ।। 2।।

पेंदया सुदामा संगी तोरा आती
दहींदुध चोरसेस उनकं साती
या चांगली नही तोरी खोळ।। 3।।

मथुरा सोळखन गोकुळमा आयेस
गवळणी संग तु रास रचायेस
लीला तोरी अनमोल ।। 4।।

नंदको लाल तु कृष्ण मुरारी
यशोदा को बाळ राधा राणी प्यारी
भावबंधन तू तोळ ।। 5।।

गौळणी

राधा बाई, चली मथुरा को बजार।।
चली मथुरा को बजार
गा राधा बाई चली मथुरा को बजार।। धृ।।

दही दूध धरश्यांन मथुराला जासे
संगमा गौळणीको मेळ रवसे
दोईपर दहिदुध को भार ।।1।।

आडवी तिडवी मथुरा की बाट
कृष्ण सुदामा फोडसेत माठ
बिचमा जमुना की धार ।।2।।

सखा ओको गा कृष्ण मुरारी
दही दूध की करसे चोरी
गौळणी भई बेजार ।।3।।

जमना मा गौळणी आगं धोवती सारी
उनको कपडा की करसे चोरी
लुकासे जमुना को पार ।।4।।

कान्हा मोरो सखा कृष्ण मुरारी
रास रचावसे बजावं बनसरी
गोपाल से निर्गुण निराकार ।।5।।

कानुबा देव

मोरो कानुबा देव बाई मचुर मूचुर लाही खासे।धृ।
सावलो सलोनो मोरो देवकी को बार
लहानपन नहीं मिलेव मायबाप को प्यार
कंस को भेव लका गोकुल मा जासे
मोरो कानुबा देव बाई मुचुर मूचुर लाही खासे।1।

गोकुलमा यशोदा न पालन करिस
नंदबाबा न ओका नखरा झेलिस
गोकुलको टुरा संग खेल मंडावसे
मोरो कानुबा देव बाई मुचुर मूचुर लाही खासे।2।

गोकूलमा दहिदूध की करसे चोरी
गोपी संग खेल खेलसे नानापरी
गोफन लका गौळणीकी हांडी फोड़से
मोरो कानुबा देव बाई मुचुर मूचुर लाही खासे।3।

बालपन कि सखी ओकी होती राधारानी
रास रच गोकुलमा संग नाचती गौळणी
गोड गोड आवाजमा बंसरी बजावसे
मोरो कानुबा देव बाई मुचुर मूचुर लाही खासे।4।

घर घर मा पूजा तोरी अष्टमीला होसे
टेठला मटली चना लाही खुशी लका खासे
डेढ़ दिवस रहस्यानी गोकुळमा जासे
मोरो कानुबा देव बाई मुचुर मूचुर लाही खासे।5।

गवड़न

जरा धीरू मुरली बजाव कान्हा
कान्हा जरा धीरू मुरली बजाव ।। धृ।।

मधुर से तोरो मुरली की तान
मन मोरो डोलसे बिसरसे भान
राधा तोरी बुलावसे तू आव।।1।।

गाई बासरू जम्या तोरो संग
बनसरी लका भया वय दंग
भक्त बुलावसेत तू आव।।2।।

पेंधा सुदामा तोरो संगमा
खेल खेलसेत गोकुल बनमा
काला खानला कृष्णा आव।।3।।

राधा रानी से प्रिया तोरी गोरी
रुक्मिणी भई भार्या तोरी
मीरा को निर्मल भक्ति भाव।।4।।

निर्गुण निराकार रूप सुंदर
हातमा बासुरी तू चक्रधर
सदा सत्य स्वरूप देखाव।।5।।

अग्निवंशीय पोवार आमी,राजा भोज की कड़ी।
रीति रिवाज चलत आय रहया सेति पेढ़नपेढी।।

देवीदेवता का प्रकार सेती तेत्तिस कोटि ।
कण कणमा आमला सब देव दिस सेती।।

गुरु दून महान आपला वाडवडील आती।
मनमा आमरो उनको प्रति श्रद्धा से मोठी।।

मरे पर स्वर्ग मा जासेती असो से ज्ञान।
उनकी इच्छा पुराव् सेत वंसज याहान।।

चवरी परा वाडवडिल रवसेत विराजमान।
सणदिनला चवरी परा बीरानी टाकसेत पोवार।।

बिरानी त उत्तम से बात पूर्वज ला करणों याद।
पर कान खोलकर आयकलो मोरी सब बात।।

माता पिता की सेवा उनको जितो परा करो।
मरे पर उनको, तुमि सोंग धतूरा नोकों करो।।

पर याद मा उनकी चवरी की मानता करो।
साल भरमा पांचबार कागुर बिरानि तुमि करो।।

संस्कार असा तुमि आपलो बेटा बेटी पर करो।
पूर्वज ला याद करन की अनमोल गठोड़ी सोडो।।

महाराजा भोजदेव

मोरो खून मा बडो उबाल से
मोरो धार मा बसेव प्राण से
मोरी बोली मोरी पहचान से
मोरी अलबेली नगरी धार से

एक राजा होतो बडो विद्वान
संपूर्ण होतो ऊ शस्त्रकलामा
पारंगत भोज वेदोको ज्ञानमा
भक्त वूं लीन वांग्देवीको भक्तिमा

राजाभोज की राजधानी धारमा
मालवा की महाराणी वा शानमा
बड़ो शूरवीर महाप्रतापी शौर्यमा
कई राजाला धूल चटाईस रणमा

बहत्तर कलामा होतो पारंगत
चौरयाशी ग्रंथ को रचियता
भोजशाला सरस्वतीसदन बन्या
ज्ञान को प्रचार प्रसारमा

पंडित छिटपला होतो महाज्ञान
कालिदास उपाधि को ओला मान
रोहंतक बुद्दिसागर दुही बड़ा विद्वान
राजाको दरबार होतो नवरत्नों की खान

कर्णदेव न चालुक्य राजा भीम संग
करिस मालवा पर आक्रमण मंग
वृद्ध राजा घातक बीमारी होती संग
हार गयेव लूट गयेव मालवा को रंग

वाग्देवी

ब्रह्मा पुत्री तू कमंडलू से उपजी स्वरों की देवी।
श्वेत वस्त्र धारी वीणा हात धरी हंसवाहिनी माई।।

माय वांगदेवी राजाभोज पर असीम तोरी कृपा।
चौरांसी ग्रंथ रचियता असो महान आमरो नृपा।।

संस्कृत को ज्ञानगाता सरस्वतीवंदना को रचिता।
महान चक्रवती राजा को वाणीमा वास माता।।

तसिच देयदे मोरो वाणी मा माय मिश्रीसी मधुरता।
मिट जाए सबको मन को अहंकार, द्वेष, कटुता।।

श्वेतवर्णी, हंसवाहिनी सरस्वती कमल पर विराजे।
चौसठकला स्वरो की देवी वाणीमा संगीत साजे।।

अज्ञानता मा ज्ञान की रोशनी मिटायदे अंदियारो
तोरी शरणमा सब आमी विद्या को वरदान देयदे।।

सबला दे सद्बुद्धि, कोनीला दुर्बुद्धी नहीं सुचे
जीवनला आमरो नवी विचार नवी दिशा दिसे।

रेहका

देखो नोकों मोरो कन दया लका येत्तो।
तुमला का मालूम मी दु:ख मा सेव केत्तो।।

होतो पयले गरीब अमीर सबकी मी शान।
हर बरात मा मोला होतो मोठो मानपान।।

मोरो शिवाय डोलत नोहतो कोनी को पान।
मोटरगाड़ीला आवनजानसाठी नोहती तब दान

वोन दौर मा मोरो परा सबको होतो विश्वास।
आननला बेटिला गुडुरलका जात होतो बाप।।

जोड़ी रव खिल्लारी ओला घोलर झुली को साज।
जानको पहले ओंगणलक मारवत खाचर की आस

तनिस को बिछाना ओको परा हतरायेव गोणपाट।
मंग पुढ़ पडदा अना धुरकोरी भाउला बड़ों मान।।

आब कोनी हूंगत ना पुसत नहीं कोनी मोला।
काहे की मोटरगाडी न दिखाईन आपलो तोरा।।

आता भाऊ चित्र मा सिर्फ दिसुसू मी तुमला।
असो होतो रेहका सांगों आपलो बेटाबेटिला।

वैनगंगा माय

अलबेली धरती पावन जहां वैनगंगा की धार
हिवरो हिवरों जंगल यहां हवा चलसे थंडीगार।
जब येन धरती पर बढेव असुरो को अत्याचार
आबूपर होती आदिशक्ती की लीला अपरंपार।।

गुरु वशिष्ठन यज्ञ करीन प्रगट्या चार वीर जवान
अग्निवंशिय क्षत्रिय वंश को उनमा वीर परमार।
धरतीला पापमुक्त करीन असुरइनला देईन मार
राजपुताना पासून मालवावरी भयेव वंशविस्तार।।

येन कुलमा उपज्या वीर राजा विक्रमादित्य महान
प्रजावत्सल, न्यायप्रिय, ख्याती होती दूरदराज
सिंहासनमा साक्षात बत्तीस पुतलियों को वास।
विक्रम संवत दिनदर्शिका की करीन सुरुवात।।

दसवीं सदीमा बसाइस बैरीसिहन सुंदर नगरीधार।
मालवामा मूंज भोज न करिन साम्राज्य विस्तार
बनाइस तराबोड़ी सड़क करिस मंदिरको जीर्णोद्धार
भोजशाला बनायकर करिस ज्ञान को प्रचार प्रसार।।

विदर्भपर राज करीन मालवाधिस पोवार सरदार
आया धारलक जगदेव पोवार चालुक्यको दरबार।
विरयोद्धा जगदेव पोवार बन्या चांदा का महाराज
शासनमा उनकी जनता होती बड़ी सुखी खुशाल।।

मालवा पर आक्रमण करीन मुगल न जनता बेहाल
संकट आयेव भारी बिखर् गया मालवा का पोवार।
मालवा लक आया नगरधन लेकर आपलो परिवार
कटक को युद्धमा मराठा संग लढया पंवार सरदार।।

जितीन युद्ध भेट मिलेव वैनगंगा को जंगली भाग
वैनगंगा किनारा पर आया सोड देईन नगरी धार।
जंगल काटीन खेती करस्यार बन गया किसान
खूनपसिना लका उपजाऊ बनाइन वैनगंगा माय।।

ओवी

पहिली मोरी ओवी बाई माता-पिता को चरणों मा
सेवा करो तुमि उनकी बाई धावरे बाळ विठ्ठला।

दूसरी मोरी ओवी बाई, पूज़नीय गुरूजनला
दूर करिन अज्ञान ला ,धावरे बाळ विठ्ठाला।।

तिसरी मोरी ओवी बाई, पंढरी को पांडुरंगला
जनी संग दरण दरीस ,धावरे बाळ विठ्ठला।।

चवथी मोरी ओवी बाई, राम लक्षुमनला
आज्ञाकारी भाई बनो धावरे बाळ विठ्ठला।।

पाचवी मोरी ओवी बाई अंजनी को सुतला
लंकादहन करिस वोन धावरे बाळ विठ्ठला।।

सहावि मोरी ओवी बाई तुलसी वृन्दावनला
दिओ लगाओ रोज बाई धावरे बाळ विठ्ठला।।

सातवी मोरी ओवी बाई गढ़कालिका माताला
कुलदेवी आय आमरी धावरे बाळ विठ्ठला।।

आठवी मोरी ओवी बाई राजा विक्रमादित्यला
न्यायप्रिय राजा बाई धावरे बाळ विठ्ठला।।

नववी मोरी ओवी बाई आमरो राजा भोजला
ग्रंथ लिखिन चौऱ्यांसी धावरे बाळ विठ्ठला।।

दहावी मोरी ओवी बाई निसर्ग माताला
झाड़ लगाओ आता बाई धावरे बाळ विठ्ठला।।

जतरा

पोवार की पोवारी आमरी जसि से प्रसिद्ध।
तसीच आमरी गढ़कालिका माय से सिद्ध।।

जतरा लग् से वहां नवरात्रि मा बड़ी विशिष्ट।
धारा नगरी की महारानी से बड़ी फलिष्ट।।

जीवन का सब दु:ख होयेती तुमरा नष्ट।
थोडोसो देवो खुदला तुमि भाऊ कष्ट।।

एक बार माता को दर्शन लेनला जावो मस्त
आमरो महाराजा भोज की रौनक से जास्त

देखो आमरो राजा भोज की आन बान शान।
धारा नगरी बड़ी पवित्र आमरों पोवार की शान।

शानदार से उज्जैन की धरती पवित्रता की खान
महाकालेश्वर भगवान शंकर सेत विराजमान

जगाओ आता पोवारी को अलख घरघर।
करो आपलो जीवन की नैय्या भव पार।।

हासरो नाचरो थोडोसो लाजरो
नाचत आयेवं श्रावण साजरो।। ध्रु।।

सोनो को पायकी ढग की चाळ बज्
मातीमा सुगंध दाट जसो कस्तुरिको
मेघमा दिससे कारो निळो घनश्याम
टीप टीप बज पाणी सुर बासुरिको।।1।।

रमत गमत रान हिवरो फुलावत
धराला शालू शोभ् नक्षीदार येव
लपत छपत आयेव् अमृत शिपत
श्रावण मोरो लग् जसो कृष्ण देव ।।2।।

आइसे इंद्रधनू येव अभार रंगण
बांधीसेस देवरायान सतरंगी तोरण
ढुक ढुक देखसे तिरीप कमान धरन
आईसे श्रावण जींव धराला फोळण।।3।।

नदीला आयेव पुर नाचत वा चलं्
रूनझुन करत झरा मतवालो झरं
पक्षी को किलबिल मधुर गुंजण
घार वा आकाशमा भरारी मारं।।4।।

हिवरी भई खेती किसान हरसायेव
सन त्योहार लेकर श्रावण आयेव
दिससे बरसात मा ज्योतिर्गमय देव
मनमयूर नाचं मोरो आनंद छायेव।।5।।

मोरी उत्कर्ष शाळा

एक दिवस सपनमा आई शाळा
शाळा मा सब होता संगी मोरा
स्वाती वर्षा बिंदु शारदा भी हुषार
नहीं खात गुरूजी को हातको मार

पोवारी को शाळा मा गुरूजी कडक
कभीभी आमरो वर्गमा देसेती धड़क
देखसेत गृहकार्य मारसेती वहिपर शेरा
नहीं ठेवत कभी श्याम पटलला कोरा

पटले गुरूजी आमरा सेत वरिष्ठ सबमा
पोवारी कविता सिकावसेत आमला
संग संग देसेत बोलो पोवारी को नारा
भोज महाकाव्य लिखिसे उनको द्वारा

येडेकर गुरूजी को मंग रवसे तास
रवसे आमला भोज वंदना की आस
सिकावसेत आमला मधुर उनको गान
कविता पाठ होसेत सबला हातो हात

इतिहास लेसेत पटले ना बिसेन गुरूजी
सांगसेत आमला आमरों पुरखां की कहानी
आमीबी सब आयकसेजन लगायकर कान
देसेजन सब उनला सिर झुकायकर मान

असी आमरी इतिहास साहित्य की शाळा
पढो लिखो सबजन पोवारी बोली को पाढा
तुमि सिको अना सखीगोईला भी शिकावो
पोवारीकी शाळा समाजमा सबवरी पोहाचावो

अदरक

जिंजीबरेसी कुल को आय
आयको अदरक येको नांव।
माती को अंदर पालन होसे
अदरक वंश को विस्तार गा।।

सबको रांधन खोलिमा मिलजासे
लसुनसंग संग, मंग पिसी जासे।
भाजी को जब तड़का लगसे
बढ़ाय देसे भाजी को स्वाद गा।।

बडी गुणकारी, तीक्ष्ण उष्णविर्य
अग्नि प्रदीपक , कटुस रस बड़ो।
लगाय लेव तुमि अदरक को रस
हरदकपारीमा देसे बड़ो आराम गा।।

सर्दी, खासी अना पोटदुखी मा
बडी तकलीफ नाक अन पेटमा।
लेयलेव शहद संग अदरक को रस
दूर पराए सर्दी, खासी जाओ भुल गा।।

कैंसर की कोशिकाको नास करसे
दमा , वात,पाचन मा से मददगार ।
तुरसी अदरक शहेद को रस एकमा
पेट को सफाईमा नहीं धर कोनी हात गा।।

सुंदर कांति साती मुख पर लगाओ
तुरसी, अदरक, शहेद को रस ला।
गोरो मुखड़ा चमक उठे साजरो
तेजोमई होये, तजेली रहे काया गा।।

वारायकर बनायलेव येकी सुठ
बढायलेव चाय को मस्त स्वाद ।।
अदरक सरिखो बहुगुणी बनो
सिक लेव अदरक का गुण गा।।

भानी

यादसे मोला सायनी मायकी भानी।
भानी सिवाय जेवत नोहती वा कबी।

भानी की याद आब बी से ताजी।
एकच भानी मा जेवत होता आमी।।

अजी बी आलनी परा मंडावत भानी।
निगरा परा जनावत अग्नि पहलो मानी।।

बीह्यामा बेटी को पायधोवन कासो की भानी।
पूर्वाजला बिरणी टाकणं कासोकी बटकी।।

कासो पितर की भानी अना टमान भारी।
भरता की गिलास ना रवत होती अत्तरदानी।।

आता सब कसार को दुकान की भई शान।
मोड़ मा गई भानी अना मोठा मोठा गंगार।।

माय

सकारी आपलों बासरू ला
सोडस्यानी कोठा मा, जासे गाय।

गोहनमा लका पलट पलटकर
तीन तीन बार देखसे वा माय।।

दिवसभर चरसे गाय रानमा।
चलता फिरता वोकों ध्यानमा।

भई गोधूलि बेला,दिवस पिलपिलाय
भुखो रहे लेकरू मुन मनमा घबरावऽ।

गावजवड आयेपरा हंबरत होती माय
देखश्यान बासरूला पन्हाव वोला आवऽ।।

मायला देखशान बासरू इटकात आवऽ
दुधकी की धारा मा बासरू आंनद पावऽ

जगमा को सबसे सुंदर चित्र ला
मोरो मन को गहराई मा उतरऽ

नीलकंठ महादेव

ऋषी दुर्वासा शिवदर्शनला शिष्यसंग भया प्रस्थान
रस्तामा दूर्वासाला इंद्रदेव भेट्या ऐरावतपर सवार

पारिजातक की दिव्य फुलमार इंद्रला देइन उपहार
फुल मामूली समजके इंद्रन ठेईस ऐरावत परा मार

ऋषी दूर्वासा भया क्रुद्ध अना देईन इंद्रदेवला श्राप
ऐश्वर्य, लक्ष्मी गई सोडके ऋषि अपमान को पाप

अहंकार नष्ट भयेव इन्द्र को ऐश्वर्य भयेव तार तार
इन्द्र पस्तायेव करिस दुर्वासा ला विनती बार बार

सागर मंथन करेपर ऐश्वर्य प्राप्त होये सब एकसात
देव,दानव करीन मंथन एकको बसकी नोहती बात

मंदार पर्वत बनेव घोटनि, चराट वासुकी नाग
पाठपर धरीन मंदारला स्वयम विष्णु भगवान

समुद्र मंथन सुरु भयेव देवदानव लगावसेत बल
रत्न चवदा निकल्या,रत्न पहलो विष हलाहल

देव दानव घबराया कोनी नहीं तयार विष पिवन
तबं आया उमा महादेव सबको बचावन जीवन

विषको प्याला उतरेव गरोमा भडकी अंगार ज्वाला
देव दानव अचंबित गरोला उमाको हात की माला

कंठ मा जम गयेव विष हलाहल निली भई काया
नीलो रंगको भयेव कंठ नीलकंठ महादेव की माया

पोरा

शोभसे जोडी सिंगाऱ्या बैइलकी आंगणमा
मिलसे मदद बईल की किसानी को काममा

परा पानी सब होय जासे पोरावरी को दिनमा
असोमाच आवसे मंग पोरा को सन अवसमा

पोरा को पहले होसे मोहबैल की पूजा घरमा
ओंग भरसे भज्याबुडुया लक टूरा की कोठामा

बैल धोएकर आया बांधो घोलर झुली आंगपरा
सिंगला बेगड़ अना मठाटी शोभसे मस्तकपरा

लगी तोरण लिजाओ बैल गांव को आखरपरा
झर झर झड़ती गावसेती पोरा फुटन को बेरा

भई आखरी झड़ती भड़केव देखो बैइल पोरा
आया घरधनी जोड़ी अना तोरण धरश्यान मोरा

पाय धोवो जेवावो जोड़ीला कुड़वाको पत्रीमा
ऋन चुकाओ धरती मायको पुत्रको येन घड़ीमा

मारबत निकलसे दूसरों दिन बुराई को प्रतिकमा
मोंगसा परासेत अना पानी दूरासे येन महीनामा

लहान टुरु साती लाकड़ी नंदीको पोरा भरसे
बैलको महत्व केत्तो से येका संस्कार करसे

तीज (अक्षय तृतीया)

वैशाख को भरेव तपन मा आवसे तीज।
पूर्वजों को मानपान को सन आय तीज।।

सकार पासुन रवसे गड़बड़ घाई सबला।
किसान मंग बखर धरकर जासे खेतमा।।

अजपासुन होसे खेतिको काम की मोहतूर।
बखर फिरावसेती धान टाकसेत पांच मुठ।।

कोयार पक्षी भी अज़ आवसे सुसरो घरं।
सांगसेत बुढा अखाढीला जासे वा माहेरं।।

सब पोवार घरं भरसेत तिजला लाल करसा।
चवरी जवर शेण को बेठ पर ठेवसेत करसा।।

कासो को भानीमा परसा को पान की पत्राली।।
सुवारी ,सेवई,पनो, बड़ा की पुर्वजला बिरानि।।

बड़ो भक्ति लका पांच आंबाको करसामा घड़।
कागुर मंग टाकेव जासे जोड़ीलं बरण को ऊपर।।

पूजापाठ होएपरा लेसेत मोठो को आशीर्वाद।
सब मिलकर लेसेत पनों, सेवई को आस्वाद।।

असो आमरो पोवार को तीज को त्योहार।
नवीन पीढ़ीला भी देबिन चांगला संस्कार।।

नवरात्री

मध्यप्रदेश की सुंदर नगरी धार मा माता कों दरबार।
चलो सब दर्शन करबिन आयेव् नवरात्री को त्योहार।।

कुलदेवी पोवारकी माता गढकालिका सुमरसेत पोवार।
कोणी कसेत काली कंकाली मां दुर्गा का नव अवतार।।

शैलपुत्री, ब्रह्मचारिणी, चंद्रघंटा, मिटावसेस अंधकार।
गरोमा चंडमुंड की माला हाथ खड़ग धरिस तलवार।।

कृष्मांडा, स्कंदमाता, कात्यायनी रुप तोरा साकार।
कालरात्री तू माता सप्तमिला गढ़कालिका अवतार।।

महागौरी, सिद्धदात्री माय करदे शक्ति को संचार।
सद्बुद्धि देजो सबला माय तू आमरी तारणहार।।

पहाट

ठंडी की वा रात बड़ी हुडहुड़ाई
सुरकुडा घरकन मोरो मंग धाई।
बचनसाती मी सगडी जवर आई
तब कहीं गरमीमा थोड़ी थबक गई।।

कसीबसी रात बिती कथडी पंघरकर
झुरमुरायकर ठंडी देखं ढूक ढुककर।
पायटला कोंबडा कवं उठोआबं लवकर
सजीव सृष्टि जागी आबं चडपडायकर।।

रंग रंगका फुल फूल्या सुगंध नानापरी
धरती लग जसी सजीसे नवीन नवरी।
सोनो बिखरेव धरतीपर भई वा पिवरी
शालू ओकों भरजरी कसीदाकारी हिवरी।।

पहाटला देखसे रवी की सवारी उगीमुगी
देखकर रविला ओद भई जरा रुसमुसी।
गुंडीस सोटा दुपटा मनको मनमा उदासी
धीरे धीरे ओद भी गई दूर बादर को देसी।।

जाग्या पशुपक्षी तसी आमला से हुरहूर
पोवारी को प्रचार प्रसार करबीन दूरदूर
नोको करो आता आलस नोको कुरकुर
पोवारी आमरी जगे मिलावो सुरमा सूर

नवमी

नवमीला नमाऊ सिद्धी की तू दाता ।
शक्तिरूपेण मोरी सिद्धिदात्री माता।।

नव दिवस शक्ती रूप की आराधना ।
दुर्गा रूप शक्तिला नमाऊ मी आता।।

कमल पर विराजी रूप सौम्य तोरो ।
हातमा चक्र,शंख,गदा,कमल प्यारो।।

तूच दुर्गा, तूच काली, माय चामुंडा ।
करू आरती तोरी माय मोरी चंद्रघंटा।।

असुरो को संहार कर जगला उद्धारी।
नमन तोला माय जगत की कल्याणी।।

आदि शक्ति माय, शिव प्रिया पारबती।
दुर्गा शक्ति, सरस्वती ग्यान बरसावती।।

माय गढ़कालिका को रूपमा कल्याणी।
आशीर्वाद तोरो माय पोवार की पोवारी।।

नारीशक्ती को जागरण को सन आय ।
नारी तूच नारायणी विश्व जननी माय।।

विपदा आये पर धारण कर चंडी अवतार।
नहीं घबराय नारायणी करसे दस पर वार।।

दुर्गा शक्ति रूपला सब नमाओ बारम्बार।
कल्याण कर माय तूच जीव को आधार।।

कालिका

असुरो को बढ़ेव जब अत्याचार
मां दुर्गाको सातवो रूप विकराल
नेत्रमा आग अना जिव्हा से लाल
थर थर कापती असुर का प्राण

प्रगटी कालिका को रूप मा माय
कारो रूप बिकराल जब देखाय
अष्टभुजा माय देख असुर थर्राय
खड्ग, तलवार खप्पर वाली माय

कारा केस खुला असुरों को कार
गरोमा चंडमुंड असुरों की से मार
गढ़कालिकाला पुजसेती पोवार
मातामाय आय येव काली अवतार

कड़लिंबको झाड़खाल्या मायको वास
देजो सद्बुद्धि सबला करजो कल्याण
तोराच बेटा आजन आमी तोराच दास
धारानगरकी महारानी माय तुच आस

लाक्तखाड

एकमा रवत होतो पुरो कुटुंब आंदी को राजमा ।
पोवार घर एक हाती सत्ता रव सासू को हातमा।।

बहुबईदी रवत चारपाच नातीनतरू उनको घरमा।
भरेव घरं रव तब सबलग्या रवत खेतंको काममा।।

उन्हारो को गावतर खायकर बहु आव गावमा।
संग खाजो आनं चिवडा, लाडू, घेंघरी सातमा।।

सकारी बहु देतं होती पीलेट खाजोको हातमा।
परिवार एकमा बसकर सब खात होता सातमा।।

पोवार माचं से टुरीला खाजो को दस्तुर खासमा।
बारा महिना की सारी चोरी दुय लेसेत सालमा।।

जसो धर्तिको रूप बदलसे लाक्तखाड घातमा।
बेटी भी खुश होय जासे मायघरको खाजोमा।।

लाक्तखाड घाई लका कास्तकार जासे खेतमा ।
खातकाचरा खारीको समया आवसे पानी घातमा।।

घाम गारसे मेहनत करसे कास्तकार वोको खेतमा।
रिमझिम पानी मा खुशी माव नहीं सबको मनमा।।

नारी तू नारायणी

नारी तू नारायणी, विश्व जन्मदायनी माय।
देवी रूप सकल नारी,नारायणी रूप आय।।

गर्भ मा ज्योति तू नव महीना जगावसेस।
मरणककळा सहस्यानी नवजीवन तू देसेस।।

सुंदर तू,नाजुक तू ओजस्वीता की मूर्ति।
कुटुंब आधार तू ,त्याग की अमर कीर्ति।।

बहिन तू ,माय तू, रिस्ता को तू आधार ।
येन रिश्ता बिना आदमी अधुरो लाचार।।

समय आये पर धारण कर चंडी अवतार।
नहीं घबराय नारायणी करसे दस पर वार।।

आदि शक्ति माय, शिवकी प्रिया पारबती, ।
दुर्गा रूप शक्ति, सरस्वती ग्यान बरसावती।।

महिमा तोरी वेद पुराण मा सकल वर्णी।
अनुसया तू त्रिदेवला दुग्धपान करावती।।

सावित्री तू सत्यवान की, सिया तू रामकी ।
जानकी बन उद्धारीस दुही कुलको मानकी।।

माय गढ़कालिका को रूपमा कल्याणी।
आशीर्वाद तोरो माय पोवार की पोवारी ।।

दुनिया येरिच नहीं कव तोला नारी नारायणी ।
हर सफल आदमी को मंग रवसे एक नारी।।

माय

मोरो तोरो पर केत्तो से पिरम
कसो मी सांगु तोला

काटा गड़से तोरो पायला
दुख लगसे मोला

तबेत होसे तोरी खराब
रातभर जागूसू मी

तोरो पोट भरणसाती
अर्धी रोटी खासू मी

दुनिया मा जगनसाती
तोला संस्कार चांगला देसू

तोरोच साती बेटा मी
काळी सरिखी झीजुसु

तोरो भविष्य बने पायजे मून
एक एक पैसा जोड़ूसू

मोठो होएकर सहारा देजो
दूध को करजा कबी नोकों भूलजो

माय को बुढ़ापा को सहारा तू बनजो
नहीं बनेस काहि चले पर चांगलो इंसान बनजो

बसंत ऋतु

वसंत ऋतु आई बसंत ऋतु आई।
छमछम करती बसंत ऋतु आई।।

अमराई मा सुगंध मोहोर की छायी।
कुहू कुहू करत कारी कोयल आयी।।

बदलेव रंग प्रकृति को गुलाबी ठंडी न्यारी।
मनभावन रंगों लक सजी से फुलवारी।।

जंगल मा आग जसो फूल परस इतराए।
पिवारी सरसो सोनो सी खेतमा लहराए।।

बसंतमा आयेव रंगीलो होरी को त्यौहार।
लिजाव होनेवालो बहुला हारगाठी की मार।।

मिठास बढ़े दुही को जीवन बहारदार ।
बहरे जीवन जसो सोनचाफा डेरेदार।।

होरी को अंग्नी मा जर जायेती भेदभाव।
मग सबको मन मा जग जाए प्रेमभाव।।

बंधूभाव लक सब रहो जसा एक मायका लाल।
मनमा ठेवो चक्रवर्ती राजा भोज की सदा याद।।

नवनिर्माण

शिक्षित नई सुशिक्षित बनो
माय का संस्कारी सपूत बनो
देखो जब भी असहाय् टुरी
भाई बनकर तुमि रक्षा करो
नवो नवनिर्माण की मेढ़ बनो।।

रोज मारी जासेत गर्भ मा टुरी
रोज मरसेती दहेज साठी टुरी
बदल जाय इंसान तू आता
जननी को सम्मान करो
आदर्श समाज नवनिर्माण की मेढ़ बनो।।

बारही मास् पानी पडसे
ठंडी मा भी बरसात से
वातावरण को चक्र बदलेव
झाड़ लगाओ झाड़ जगाओ
जनजागृति की मेढ़ बनो ।।

सांगों नोकों दूसरोला
पोवारी बोले पाहिजे
पोवारी बोलन् की सुरुवात
घर पासुंन तुमि करो
पोवारी नवनिर्माण की मेढ़ बनो।।

राखी

राखी को रेशमी धागा, भावनाओं को समुदर
येव रिश्ता भाई बहिन को जगमा सबसे सुंदर।।

श्रावण की रिमझिम फुहरमा पौर्णिमाको दिस
धरती न चंदामामाला इंद्रधनुषकी राखी बांधीस।।

युद्ध मा श्रीकृष्ण की अंगठी भई खून लक लाल
द्रोपदीन आंचल को टुकड़ा देइस अंगठीला बांध।।

रंगबिरंगी राखी देखकर मन मोरो ललचाय
राखी लेऊ कोनसी शोभे मोरो भाईको हात।।

दस दुकान फिरस्यार राखी लेयेव बाका सात
घरच अटायेव खोवा देयेव केशर इलायची टाक।।

करेव तयारी हाउस लक केरा को लेयेव घड़
आई आपलो माहेरं मोरो टुरी पटीको संग।।

सीता जसि भोवजी पाय धोएकर करिस स्वागत
सुंदर रागोंडी बनायेव आरास पिढोला सजावत।।

राम लकस्मन भाई मोरा बस्या सजायेव पीढोपर
सिरपर झाकेव दुपटी मंग करेव कुमकुम तिलक।।

हाथपर सोभ रेशमी राखीको बंधन जनम जनम
खेलसे मनमा बनकर चित्रहार आमरो बचपन।।

झाड़ लगाओ एकतरी राखीकी याद जनमभर
पर्यावरण को रक्षण करीबन सबजन मिलकर।।

पोवारी स्वागत गीत

हर कली कर रही से तुमरो स्वागतम्
स्वागतम् स्वागतम् स्वागतम् स्वागतम्। धृ।

बड़ों सुंदर सुहावन समय आयी से
अतिथि आया यहां,सबको स्वागत से

भगवान् सरिसो पूजन,करबी अज सब
स्वागतम् स्वागतम् स्वागतम् स्वागतम् ।।1।।

शब्द सुमन् का मालामा पिरोया मनी
श्रद्धा लका बनाया ,या माला आमि

करसेजन् अर्पित मिलकर श्रद्धा सुमन्
स्वागतम् स्वागतम् स्वागतम् स्वागतम् ।।2।।

पोवार समाज को मेळावा यहाँ अज् से
अतिथियों लका सजी या फूलबाग से

करसेजंन अर्पित उनला शब्द सुमन्
स्वागतम् स्वागतम् स्वागतम् स्वागतम् ।।3।।

याद

आमरो बचपन की बातच होती न्यारी
धान भरनला ,धान की होती कोथरी

दस पैसा को बरफ, पिपरमिंट की गोली
आंबा को माचला पाटन पर की खोली।।

ठंडीमा ओढ़न साती कपड़ा की कथडी
तापनसाठी रवत होती माती की सगडी।।

चुरनी मा झुनझुरका खेतमा जाजन
बंडी को चाकसंग गोल गोल फ़िरजन।।

लहानांग आंगन मा तीन औली चूल्हो
चटनी भाकर की याद कभी नहीं भूलं।।

मलोका मा रव् आंबाको मस्त रायतो
बिना तेल को बी लग् स्वादिष्ट भलतो।।

गली पर सब जन छुपन छुपाई खेलजण्
रेस लगावन साती कोनटोमा छुपजन्।।

आता बस याद बचपन की रह गई
समय को जातोमा याद भी पिस गई।।

सूर्य देखो सोनो को रथपर सवार
उतर रही से धरती को आंगन मा।
कण कण जाग रही से धरती पर
देखो नवसंजीवन को स्वागत मा।।

चिमनी पाखरू की मधुर ध्वनि
बगीचा मा फूलकी हासती कमान।
दुनिया होती आबवरी शांत निशब्द
सब तिरीप को संग भया सजुमान।।

धीरू धीरू आता दुनिया गतिमान
समय चक्का फिरेव तिरीप भई जवान।।
तेज चांदी को आयेव तिरिप को तोंडपरा
झवराय गया धरती का सब वान।।

गाय, बैईल सब सुस्तान आया कोठामा
तपनको झर्राटा फूलइनं सोडिस आंग।।
पशु पक्षी की दमछाक भई तपन लका
पाणी नहीं मिल कही, गरोमा लगी आग।।

माणूस लुकायेव आपलो आपलो घरमा
परसा,गुलमोहर सजी से तपनमा लाल।
सबला आता से बीरानी बेरा की आस
तपन होए थोड़ी बूढ़ी सावोली बने ढाल।।

मोहतूर

उन्हारों मा झवरावसे पड़से गरमी की मार।
रोवसेखाकसे उतरसे ओको हिरवो सिंगार।।

हिरवी शालू जरसे खोबा वोला जागनजाग।
चातक सरिसी बाट देखसे सूर्य ओकसे आग।।

नहीं आव जबवरी मिरूग को पानी की धार।
धरतीपर सब सजीव को पानी से पालनहार।।

आई आई देखो मिरूग की पयली या फुहार ।
नाच उठ्या धरती आयेव निसर्ग को तारणहार।।

फुट्या नवंकुर धरती को रूप देखो हिरवोगार ।
मोहतुरसाती सजेव बखर किसान भयेव सार।।

धरीस धान, बीजबोहनी अना आरती कि थाल ।
दस कुडो की भरीस खार खुशिला नहीं ठिकान।

पानी बरसेव, सरेव पऱ्हा मिलेव वोला समाधान।
दिवारी आई सोनो सरीखो काटन आयेव धान ।।

मोहतूरकी आणीस चरू,डोकरीला खीरको मान।
काटिस धान भऱ्या पोता खुशिला वोको उधान ।।

करिस कडही नारेनपुडी मानिस धरतीको आभार।
नही हट मेहनतला किसान खरो जग को आधार।

मोहतूर

आयेव तीज ला करसा को सन
कास्तकार को हर्षित भयेव मन

बरखा की पहली बूंद पडी भुपर
महक उठी धरती सुंगध

तीज को दिवस जुपिस बखर
गयेव खेतपर सजी आरती लेकर

जोडिस हात ईश्वरला उम्मिद लक्
करीस मोहटुर पांच मुठ धानलक

पानी पड़ेव रिमझिम फुहार धरतीपर
नीकलेव अंकुर वापी खारी सरसर

परहा भयेव खात टाकीस घातपर
निकलेव सोनो खेतमा पात पातपर

कटाई की करिस मोहतुर नवो धानलक
हर्षित भयेव मन नवो खीर को बासलक

कटेव धान बांधिस बोझा तनीसको बंदलक
भई चुरनि खुश किसान धरती को पुनलक

धान बिकीस नहीं निकलेव खर्च घामको
मरेव किसान लगाइस फासी खांदीला झाड़को

जातो

झुंनझुरका भयी आब् करूसू घाई
रोटी बनाऊंन् कसी, पीठ् नहाय् घर् ।
उठ् मोरी मैना बेटी, कोंबडा देईस् बांग्
दुई माय् बेटी दरबिन् पीठ जातो पर् ।1।

आव् जलदी बेटी, संग् चाऊर की ताटी
धर बोहरी हाथमा ,जातो झाडझुड कर् ।
बसं आता यहान, चाऊर टाकजो थोडका
रामनाम लेयकर, जातो फिरावबिन् गरगर् ।2।

फिरसे् जातो गरगर्, सांगसे तत्वज्ञान
मेहनत् करो तुमि, नोको बसो घरपर् ।
चावुरको एकएक कन्, पीस् जासे जातोमा
पांढरो पांढरो पीठ कसे, मेहनतला नई सर् ।3।

जसो जातो फिरं गरगर् पीठ सरसर पड्
मेहनत को रोटीला आये अमृत कि सर् ।
नोको करो चोरी चाटी राख होये जीवन
सदाचारी ,शाकाहारी, ठेवो शुद्ध आचर ।4।

जातो को दांड ठसेव् रवसे पाटा पर नई हल्
अडिग रहो तुमि, नोको भिओ कबी कणभर् ।
फिरसे जातो जसो गरागर् तसो से जीवन्
सुख दुख को चक्की मा दुख सेत् मनभर ।5।

मती नोको ठेवो गहाण् करो मेहनत् को पीठ
जातो सांगसे आमला रस्ता मेहनत् को धर् ।
जपो राम नाम सब् ओला पूर्वजो को आशिर्वाद
जातो फिरावसे पांडुरंग जनी संग दरण दर्।6।

मोरो देश

हिमालय से मुकुट जेको
चरण धोवसे सागर विशाल।
सोनो की चिड़िया मोरो देश
नाव ओको प्यारो हिन्दुस्थान।।1।।

गंगा, यमुना, कृष्णा, कावेरी
नदी पवित्र, सागर भी महान।
झरझर श्वेतशुभ्र झरा झरसेती
कलकल करसेत नभमा विहान।।2।।

सब जाती धर्म का लोक यहां
एकता से मोरो देश की शान।
अलग से सबकी बोली भाषा,
हिंदीला से राजभाषा को मान।।3।।

ऋषि मुनि की या पावन भूमी
भया यहां अनेक संत महान।
शुश्रुत न लिखीस शुश्रुत संहिता
शल्यचिकित्सा को से उन्नत ज्ञान।।4।।

शून्य,पाई, त्रिकोणमिति, दशमान
आर्यभट्टन देइस दुनियाला उपहार।
हर मंदिर की कारीगीरी अती सुंदर
उन्नत तकनिकको होसे दर्शन यहान।।5।।

कोहिनूर होतो मोरो देश की शान
गीता ,रामायण मा जीवन को ज्ञान।
छत्रपति शिवाजी भयेव राजा महान
रानी लक्ष्मीबाईन फोडिस शत्रुला घाम।।6।।

गीत गाऊन, मस्तक नमाऊन बार बार
महिमा केत्ती गाऊ यहां नवरतनकी खान।
महान होतो, महान से मोरो हिन्दुस्थान।
जय जय हिन्दुस्तान जय जय हिन्दुस्तान।।7।।
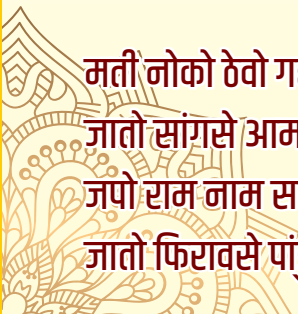
पोवारी

बहुत दिन बादमा आयेव उनको फोन
मी क़येव उनला तुमि बोल सेव कोन

नाव आयेक कर दूर भयेव भ्रम
विदेशमा से मुन मोला भूल गयेव

विदेश वालो की छोडो भाऊ बात
देश वालो न भी सोडीन मोरो साथ

पहले त दरारा होतो मोरो खास
आब खेडामा से थोडो मोरो नाव

बची सेव थोडी सी मी आता
बोली जासेव खेडा मा खास

दुसरी तिसरी कोणी नोहोव मी
पोवरी भाषा तुमरी मी आव

जगाओ मोला बोलो घरघरमा
तबच फुलुन फलुन समाजमा

तबच बढ़े मोरो मान सम्मान
करो नवो नवों साहित्य निर्माण

तुमि पोवार मोरा पुत्र खास
मोरो मान बढ़े असो करो प्रयास

नहानपण

आमरो नहानपण की बातच न्यारी
धान भरणला धान की रव कोथरी

दस पैसा को बरफ, पिपरमिंट की गोली
आंबाको माचला पाटणपर की खोली

थंडीमा पांघरनसाती कपड़ा की कथडी
तापनसाती रवत होती माती की सगडी

चुरनी मा झुंनझुरका खेतमा जाजन
बंडीको चाक संग गोलगोल फिरजन

लहानांग को आंगनमा तीन औवली चूल्हों
चटनी गाकड़ की याद कबी नहीं भूलं

लोकामा रव आंबाको मस्त रायतो
बिना तेलको बी लग स्वादिष्ट भलतो

गली पर सबजन लपाछुपी खेलजन
रेस लगावन साती कोंटोमा लूकावजन

आब् बस याद लहानपन की रय गई
समय को जातोमा याद बी पीस गई

गंगार

पोवार को गंगार मा
साक्षात गंगा समाई से
जेन हात न बनाइस गंगार
वोको हातकी भी वाहवाही से

माती को बनेव गंगार
शीतलता वोको गुन से
उन्हारो मा मस्त ठंडो पानी
हातपाय धोवनोमा सुख से

बड़ो काम को येव गंगार
धोवो ऐको पाणी लक आंग
आंदी की बाई पानिमा देखकर
भरत होती लाल कुकु की भांग

पोवार को बिह्यामा मान गंगारला
मथनी, गंगार रवसे कुंभार को बानमा
नवरी सार होसे,ना बहु घर आवसे
नांदळ को दिवो ठंडो करसेती गंगारमा

आता ईट सीमेंट को जंगलमा
गंगार भी कही दवड़ गयेव
पक्षी को पानी पिवन को साधन
आता भूतकाल किं याद भयेव

सावधान

सावधान सब होय् जाओ तुमि
पोवारी मी भाषा सेव् खतरा मा।

शहर वालो न भुलाय देईन मोला
सिर्फ बोली जासु आता खेड़ामा।।

हिंदी, अंग्रेजी बोलसेत् फर्राटालका
लाज लगसे उनला पोवारी बोलनला।

बोल्या कोनी उनको संग पोवारी मा
देखसेत एकमेक करा टकामका ।।

येत्ती का लाज लगसे तूमला बोलनला
लग्यासेव मोरो अस्तित्व मिटावनला।

मी सेव त् तुमरी से पहचान समाजमा
मी मिट गई त् कसो सांगो नवो पिढीला।।

गल्ड्या गडू, सळ गयेव् ना पेट गयेव्
लुप्त होय जायेत् समय को पेट मा।।

झुंझुरका,माहतनी बेरा,भानी, बटकी
सुंदर शब्द सब् उडाय जायेत गतकालमा।।

आपलो अस्तित्व बचावनो रहे, होंवो तैय्यार
देव मोला नवनवो साहित्य लक जीवन दान।

नवी नवी रचना की रक्तसंजीवनी बूटी लक
देय देवरे आपलो माय पोवारीला जीवनदान।।

विषाणु

अरे ! कहान गयात तुमि सब भारतवासी।
एकटो यहांन बडो फड़फड़ाय रही सेव।।

अज् रस्ता परा हिडंता काहे नहीं दिसो।
सजधज कर तुमरोसाती तैयार भई सेव।।

मोला नई ओरख्यात अज्ञानी लोक तुमि।
आव कोरोणा विषाणु मजा लेय रही सेव।।

सबको मनमा बसेव मोरो केत्तो मोठो भेव।
तबाई मचाएकर हाहाकार खुब मचाई सेव।।

मोरा अदिक सेत लगीत रंगींला भाई बन्धु।
जिनला तुमरो मणमा लुकायकर ठेई सेव।।

व्देष, अहंकार, ईर्षा, जलनखोरी लालच।
इनला सदा सदा साठी धरती पर ठेई सेव।।

जसो आब कर रहया सेव तुमि मोरो खात्मा।
अहंकार को विषाणु ला काहे ठेय रह्या सेव।।

सैईतान बनकर दूसरो को जिनगी संग।
काहे तुमि हर जाग् खेल,खेल रह्या सेव।

गलि गलिमा बनकर बहिन बेटी को क़ाल।
काहे तुमि नरभक्षी बन्या फिर रह्या सेव।।

मी विषाणू कोरोना अज़ सेव सकारी नहाव।
पर तुमि काहे विषाणू बनकर फिर रह्या सेव।।

मातृ-पितृ

प्रार्थना मोरी मातृ चरणोमा
नव महीना ठेइस उदरमा।

यातना कठिन झेलिस
फुकिस प्राण मोरो शरीरमा।।

दुनिया देखाइस मोला
मोती संस्कार का देइस।।

माया को पदर झाककर
मोठो मोला करीस।।

प्रार्थना मोरी पितृ चरणोमा
धिर खंबीर ओकों बाणा।

वरर्या लका कडक नारेन
अंदर पीरम को खजाना।।

दुनिया मा जगन साती
शिक्षा पिता की कड़क।

मारेत भी वय कभी मोला
पाठपर मोरो उमटत नहीं बर।।

प्रार्थना मोरी गुरु चरनोमा
ज्ञान की बाराखड़ीको दाता।

हरिदुन येकी महिमा अपार
नमाओ गुरु चरणोंमा माथा।।

हिरोती

आयेकलेव भाऊ तुमि सब गुणीजन
मी करूसु हिरोती को गुणगान गा ।
बड़ी गुणकारी वा पिवरी धमक
रूप सुंदरी सोनो की खान गा ।।

पहले माता मायला चढ़ावसेत् हिरोती
पोवार को बिह्यामा येला बड़ो मान गा ।
मग् नवरी बाईला लगावसेत् हिरोती
तबच चमकसे रूप की खाण गा ।।

पाचगाठी लगिंनडेरला नेंगदस्तूर को आगाज
लगींन लगन् को पहले पलटावसेत गाठ गा ।
नवरा नवरी पर पडे करस को पानी
बन जायेत पिरम की खाण गा ।।

सर्दी मा पियो ओवा हिरोती को हरारा
लगायलेव चंदन हिरोति को लेप गा ।
निखर जाए येव गोरो सुंदर मुखड़ा
कांति सोनो की बन जाए ख़ाण गा ।।

आमरो भाजीमा जादा हिरोती को तड़का
मनुनंच से पवार की कांति गोरी पान गा ।
रोज चाय, दूध बनाओ, टाको हिरोती
पराये मुख को मुरूम की खाण गा ।।

खेल

याद आवसे मोला गम्मत गुम्मत की कट्टी।
घड़ी भर मा मंग होय जात होता बट्टी।

लगोरी को खेल मा रोनटी बी खाजन।
गण देन को घनी खेल बिचकावजन।।

चंगा अस्टा को खेल मा नजर चुकावजन।
एक पर एक बिजी ठेयश्यार अष्टा आंनजन।।

बावला बावली को खेल खेलजन मिलकर।
नवरा बायको को खेलमा जाजन घुलकर।।

गम्मत गुम्मत को नवरा मंग बजारला जात होतो।
कहा गईस सोन्या कि माय चिल्लात आवत होतो।।

खेल होतो आमरो गंमत गम्मंत को बाई।
पर ससारको खेलला भी वोत्ती मज़ा नहीं।।

आब त सोनों ना पित्तर वोतोंच चमकसे।
ससार को माणूस ओरखन फजिती होसे।।

वरत्या वरत्या मानुस मिठो बोल बोलसे ।
अंदर लक मनामा कपट ,अहंकार रवसे।।

मनुष्य वरत्या लका ससार को दिससे।
पर अंदर लक मन कारो कुचकुचो रवसे।।

मनुन सब चमकीली चीज सोनो नहीं रव्।
गम्मत गुम्मतला ससार की सर नहीं आव।।

बरसात

(चाल: चांदणं चांदणं झाली रात)

रिमझिम, रिमझिम आईं बरसात
धरती माय जेकी, देखत होती बाट

हिवरों हिवरों रूप निखरेव गा
अंकुर धरतिला फुटेव गा
जंगल झाड़ ना, झाड़ भया हिवरागार
रिमझिम, रिमझिम आईं बरसात
धरती माय जेकी, देखत होती बाट।।1।।

जीवजंतुला जीव फुटेव गा
नागोबा भी सरपट सुटेव गा
भेपकिला, भेपकीला आयेव जोर खास
रिमझिम, रिमझिम आईं बरसात
धरती माय जेकी, देखत होती बाट।।2।।

कारा कारा बादर गरजसेत
मोर भी बनमा नाचसेत
पशु पक्षी मा, पक्षीमा आईं नवीन जान
रिमझिम, रिमझिम आईं बरसात
धरती माय जेकी, देखत होती बाट।।3।।

किसान मन मा खुश भयेव गा
नांगर धरकर खेतमा गयेव गा
मन मा, मनमा ओको बड़ो उल्लास
रिमझिम, रिमझिम आईं बरसात
धरती माय जेकी, देखत होती बाट।।4।।

खारी दोरी भई झटकन
पऱ्हा लगाइस सटकन
नहीं मेहनतमा, मेहनतमा ओको आट
रिमझिम, रिमझिम आईं बरसात
धरती माय जेकी देखत होती बाट।।5।।

आयेवं सन बाई अखाडी को
गढकालिका माताला सुमरण को
माता की कुरपा, कुरपा बरसे बाई सब पर
रिमझिम, रिमझिम आईं बरसात
धरती माय जेकी देखत होती बाट।।6।।

कास्तकार

(चाल: चांदणं चांदणं झाली रात)

कास्तकार कास्तकार से मोरो बाप
मेहनत करं से नहीं देखं कोनीकी बाट।। ध्रु।।

सकारी उठकर बांधी पर जासे
खातकचरा पासून सब करसे
ओको मेहनतमा, मेहनतमा नहाय आट
मेहनत करसे नहीं देख कोनीकी बाट।।1।।

बडो आसलक खारी भरसे
पऱ्हा लगावसे धान काटसे
नहीं मिलना, मिलना धानला भाव
मेहनत करसे नहीं देख कोनीकी बाट।।2।।

घरका सबजन काम करसेत
ठोकरको खासेत बारीक बिकसेत
कपडाला, कपडाला खोबा साठ
मेहनत करंसे नहीं देख कोनीकी बाट।।3।।

जोंड धंदा साती गायी पालसे
दूध बिकस्यारी बजार करसे
नहीं मिलना, मिलना दूध ला भाव
मेहनत करंसे नहीं देखं कोनीकी बाट।।4।।

डोई पर कर्जा को बोझो से
शिक्षण, बिह्याया को ओझो से
कर्जा मा कर्जामा डुबेव कास्तकार
मेहनत करंसे नहीं देख कोनीकी बाट।।5।।

अन्नदाता येव जगको आय
ठेवो काहीं तुमी येको ख्याल
अकाल, अकाल पडसे हर साल
मेहनत करंसे नहीं देख कोनीकी बाट।।6।।

सरकार को भी ध्यान नाहाय
खर्च अदिक से भाव नाहाय
मारेव जासेना, जासेना कास्तकार
मेहनत करंसे नहीं देख कोनीकी बाट।।7।।
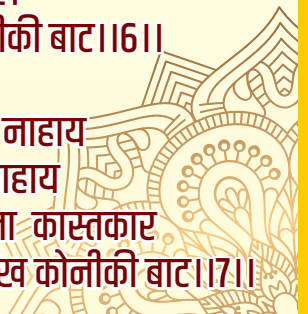
आरती गढ़कालिका माता की

(चाल : आरती कुंजबिहारी की)

आरती गढ़कालिका की,
आमरो कुलदेवी मां कि।। धृ।।

हातमा मा नौरंग को चूड़ा
गरोमा चंडमूंड माला
कानमा कुंडल झलकाला
माथा कुमकुम, सुंदरतम रूप
धारेश्वरी माता की।।1।।

हिरवोकच साड़ी को सिंगार
हात मा खड्ग धरे तलवार
नयनमा करुणा की से धार
पोवार की माय, भोजला पाय
संकट हरनी माता की।।2।।

दुर्गा अंबे रूप तोरो आय
सप्तमीला काली रूप देखाय
उज्जैन मा विराजी तू माय
संकट हरनी,सुख करनी
माता कालिका रानी की।।3।।

धार मा सजी से दरबार
पावन महि नदी की धार
तुच आमरी सृजनहार
आमला तार, भवसागर पार
माता चामुंडा रानी की।।4।।

तोरो माय करु मी गुणगान
आरती की सजाऊ थाल
करु भक्ति तोरी अपार
मुक्ति को द्वार,तोरो नाव
माता भद्रकाली की।।5।।